ओ३म्

# सत्यार्थ सौरभ मासिक

जनवरी–२०२०

जनवरी–२०२० ◆ वर्ष ८ ◆ अंक ०८ ◆ उदयपुर

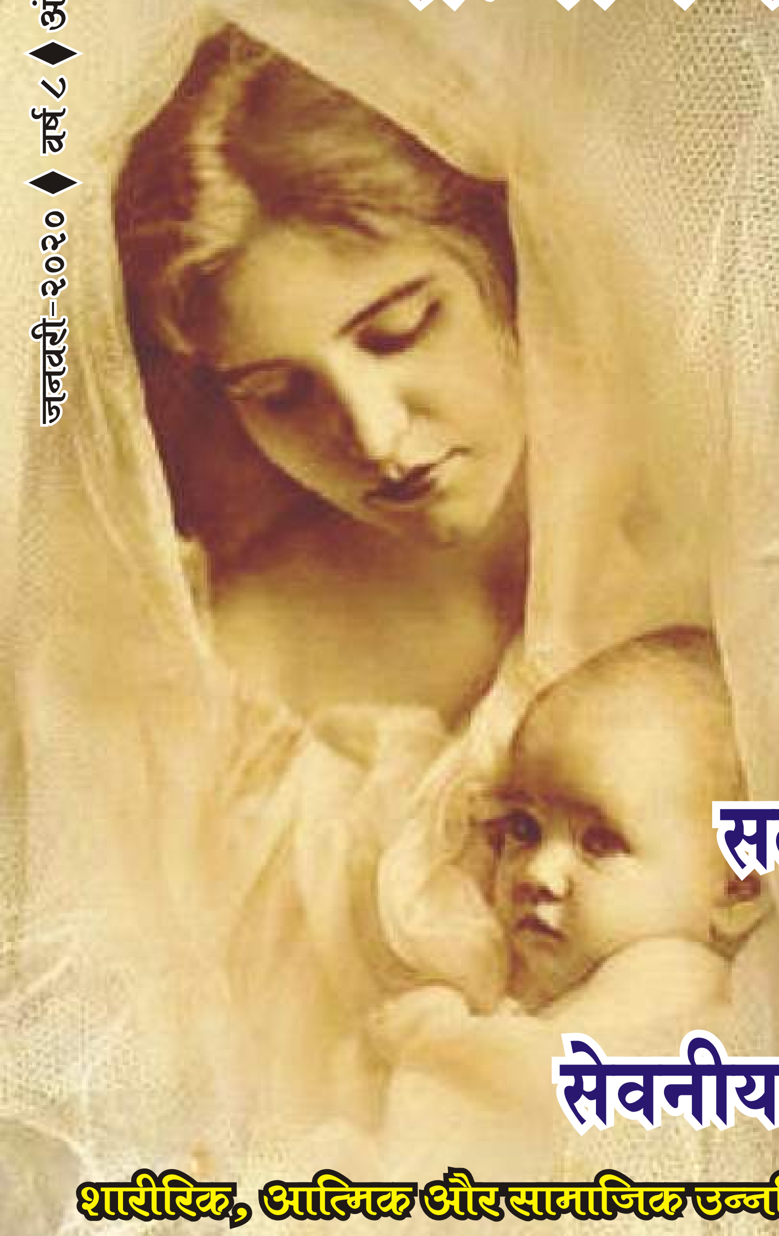

सुन्दर स्वस्थ रहे
यह बचपन,
माता–पिता करें
यदि नियमन।
सत्यार्थ प्रकाश की है
यह शिक्षा,
सेवनीय का ही हो सेवन।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ६७

आपका प्यार, आपका विश्वास
एमडीएच ने रचा इतिहास
1919·CELEBRATING·2019
1919·शताब्दी उत्सव·2019
100
Years of affinity till infinity
आत्मीयता अनन्त तक
MDH
मसालों में 100 साल की शुद्धता के जश्न
पर सभी ग्राहकों, वितरकों एवं शुभचिन्तकों को हार्दिक बधाई
महाशय धर्मपाल जी
पद्मभूषण से सम्मानित
विश्व प्रसिद्ध एमडीएच मसाले शुद्धता और गुणवत्ता की कसौटी पर खरे
भारत सरकार द्वारा "ITID Quality Excellence Award" से सम्मानित किया गया।
यूरोप में मसालों की शुद्धता के लिए "Arch of Europe" प्रदान किया गया।
"Reader Digest Most Trusted Brand Platinum Award" भी प्रदान किया गया।
The Brand Trust Report ने वर्ष 2013 से 2019 तक लगातार 5 वर्षों के लिए ब्रांड एमडीएच को India's Most Trusted Masala Brand & India's Most Attractive Brand का स्थान दिया है।
MDH मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच-सच
KASHMIRI MIRCH
DEGGI MIRCH
Kitchen King
महाशय जी ने बड़े पैमाने पर समाज और मानव जाति की सेवा के लिये व्यवसाय को समर्पित किया है। एक सर्वश्रेष्ठ उद्योगपति होने के साथ साथ वह न केवल एक परोपकारी व्यक्ति हैं बल्कि समाज के कमजोर वर्ग के लिये ताकत और समर्थन का एक स्तम्भ भी हैं। एमडीएच एक कंपनी ही नहीं वह एक संस्था है एक विशाल परिवार है जोकि अपने सहयोग से 70 से अधिक सामाजिक संस्थाएं जैसे स्कूल, अस्पताल, गौशालाएँ, वृद्धाश्रम, अनाथालय, गरीब छात्रों, विधवाओं एवं गरीब परिवारों एवं आर्य समाज इत्यादि कई सामाजिक संगठनों की आर्थिक रूप से महाशय धर्मपाल चैरिटेबल ट्रस्ट और महाशय चुन्नीलाल चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से मदद करते हैं।
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com
ESTD. 1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

# सत्यार्थ सौरभ


**प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ**

महाशय धर्मपाल जी ( एम.डी.एच. )
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी ( अमेरिका )

**परामर्शदाता संपादक मण्डल**

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

**सम्पादक**

अशोक आर्य

**प्रबन्ध सम्पादक**

भवानी दास आर्य

**प्रबन्ध सहयोग**

नवनीत आर्य ( मो.9314535379 )

**व्यवस्थापक**

सुरेश पाटोदी ( मो.9829063110 )


| सहयोग | भारत | विदेश |
|---|---|---|
| संरक्षक | - 11000 रु. | $ 1000 |
| आजीवन | -1000 रु. | $ 250 |
| पंचवर्षीय | - 400 रु. | $ 100 |
| वार्षिक | - 100 रु. | $ 25 |
| एक प्रति | - 10 रु. | $ 5 |

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२०
पौष शुक्ल द्वादशी
विक्रम संवत्
२०७६
दयानन्दाब्द
१९५

**January - 2020**

०४ वेद सुधा
१३ आर्य समाज का स्वर्ण युग
१५ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०१/२०
१६ ईश्वर की उपासना
१९ अर्द्धांगिनी
२१ बलि प्रथा-अधर्म का प्रतीक
२२ स्वामी दयानन्द की आदर्श शिक्षाएँ
२५ राष्ट्र गौरव महाराज सुहेल देव
२६ स्वास्थ- आयुर्वेदिक योग उपचार
२७ आर्य जगत् के समाचार
३० सत्यार्थ पीयूष- सर्वशक्तिमान ईश्वर
समाचार २८
हलचल २९



सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

| | |
|---|---|
| पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 2000 रु. |
| आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 1000 रु. |
| चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 750 रु. |



स्वामी — श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ८ अंक - ०८

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

**प्रकाशक**

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

# वेद सुधा

## हम उषाकाल में तेरी स्तुति करते हैं

**तव व्रते सुभगासः स्याम स्वाध्यो वरुण तुष्टुवांसः।**
**उपायन उषसां गोमतीनामग्नयो न जरमाणा अनु द्यून्।।** - ऋग्वेद २/२८/२

**अर्थ-** हे **(वरुण)** वरुण भगवान **(तुष्टुवांसः)** तेरी स्तुति उपासना करनेवाले हम **(स्वाध्यः)** उत्तम विचारों वाले होकर **(तव)** तेरे **(व्रते)** नियम में रहते हुए **(सुभगासः)** सौभाग्यशाली **(स्याम)** बन जाएँ **(गोमतीनाम्)** सूर्य की किरणों वाली **(उषसाम्)** प्रभात वेलाओं के **(उपायने)** आने पर **(न)** जैसे **(अग्नयः)** अग्नियाँ, [प्रज्ज्वलित होकर उठती हैं] वैसे ही **(अनुद्यून्)** प्रतिदिन **(जरमाणाः)** आपकी स्तुति-उपासना करते हुए [हम भी चमक उठें।]

यदि हम सौभाग्य चाहते हैं तो हमें भगवान के नियमों में रहकर चलना होगा। सौभाग्य का अर्थ होता है 'उत्तम भग की अवस्था'। ऐश्वर्य, धर्म, यश, शोभा, ज्ञान और वैराग्य- इन पदार्थों को 'भग' कहते हैं। जिस जीवन में यह छहों वस्तुएँ प्राप्त होंगी वह सौभाग्य का जीवन कहलाएगा। यह सौभाग्य का जीवन प्रभु के नियमों में रहकर चलने से प्राप्त होता है। प्रभु ने व्यक्ति और समाज के लिए जड़ जगत् और आत्मिक जगत् के लिए- सभी के लिए अनेक प्रकार के नियम बना रखे हैं। जो इन नियमों के अनुकूल चलेगा वह उनसे लाभ उठाकर सौभाग्यशाली बन जाएगा।

प्रभु के नियमों में रहकर चलने के लिए उत्तम विचारों की आवश्यकता है। बिना उत्कृष्ट विचारों के आदमी से कठोर नियम के पालन का जीवन व्यतीत नहीं हो सकता। अपने विचारों को उत्कृष्ट बनाने के लिए हमें प्रभु का '**तुष्टुवान्**'- स्तुति करनेवाला बनना चाहिए। उसकी स्तुति-उपासना के द्वारा हमारे अन्दर अपने प्यारे से उस प्रभु के गुण आ जाते हैं और हम प्रभु के नियमों में रहकर चलने के योग्य बन जाते हैं। दूसरे शब्दों में प्रभु के गुणों को जीवन में धारण कर लेना ही प्रभु के नियमों पर चलना है।

प्रभु की उपासना का, प्रेम में भरकर उसके गुण गाने का, उपयुक्त समय कौन-सा है? इसके लिए कहा कि जब सूर्य की किरणें

उषःकाल बनाती हैं, वह प्रभु की उपासना का सर्वोत्तम काल है। उस समय अग्निहोत्र के लिए प्रज्ज्वलित की गई अग्नियाँ जैसे चमक रही होती हैं, वैसे ही उस समय की गई उपासना द्वारा हमारा आत्मा भी पवित्र होकर चमक उठता है। काल का, अर्थात् सूर्य के प्रकाश की अवस्था-विशेषों का भी हमारी चित्तवृत्तियों पर विशेष-विशेष प्रभाव पड़ता है। सूर्य का उषःकालीन प्रकाश हमारे अन्दर आध्यात्मिक चित्तवृत्तियों का, प्रभु-प्रेम और पवित्रता की मनोभावनाओं को उत्पन्न करता है, इसलिए प्रभु ध्यान का सर्वोत्तम काल वही है। उस समय हमें अग्निहोत्र और सन्ध्या दोनों यज्ञों द्वारा प्रभु की उपासना करनी चाहिए, मन्त्र के उत्तरार्द्ध से यह ध्वनि निकलती है।

हे मेरे आत्मन्! तू भी उषःकाल में प्रभु के उज्ज्वल गुणों का स्मरण करके अपने को अग्नि की तरह चमका ले।

- आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति
(साभार- वरुण की नौका)

आत्म निवेदन

# माइंड लिंचिंग ②

गतांक से आगे .........

आर्यों का गौरवमयी इतिहास और उन्नत संस्कृति अंग्रेजों को परेशान करते रहे और आज भी उनके उच्छिष्ट की मानसिक और भौतिक खुराक पर पलने वाले इतिहासकारों को यह चुभता है। अतः वे इनकी श्रेष्ठता की स्थापना के हर प्रयास के विरोध में वितण्डा खड़ा कर देते हैं।

'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय' की सार्वभौम पवित्र प्रार्थना के खिलाफ उच्चतम न्यायालय में याचिका दायर भी की जा सकती है ऐसा कौन भारतीय सोच सकता था? पर ऐसा हुआ। क्या यह 'माइंड लिंचिंग' का परिणाम नहीं?

यही कारण था कि अंग्रेज चाहते थे कि भारत की बागडोर जिन प्रतिष्ठित लोगों के हाथ में रहे उनकी मानसिकता वैसी ही हो जैसी मैकाले ने कल्पना की थी। यही कारण है कि भारत पर अंग्रेजों के शासन को ईश्वरीय वरदान के रूप में समझने वाले और 'मेरा ईसा, मेरा मधुर ईसा, मेरे हृदय का सर्वाधिक मूल्यवान हीरा....' आदि कहने वाले केशवचन्द्र सेन को वायसराय लार्ड लारेंस ने 'भारतीय जनता का उद्धारक' कहकर अभिनन्दित किया था।

यहाँ यह ध्यान दिलाना भी आवश्यक है कि कांग्रेस की स्थापना भारत को स्वतंत्रता दिलाने के उद्देश्य से कदापि नहीं की गयी थी। ए.ओ.ह्यूम ने भारत के अभिजात्य वर्ग के उन नेताओं को जिन का जनमानस पर प्रभाव था एक मंच देने के लिए इकट्ठा किया जिससे उनका ध्यान शासन में सम्मानजनक स्थान मिलने तक सीमित किया जा सके और स्वराज्य का ख्याल भी उनके मन में न आवे। वस्तुतः इसी आशय से कांग्रेस की स्थापना की गयी।

प्रारम्भ में कांग्रेस का यही कार्य रहा। सर विलियम के लेख से हमारी बात समझी जा सकती है जिसका उल्लेख 'कांग्रेस का इतिहास' में श्रीयुत् पट्टाभि सीतारमैय्या ने किया है। 'एक तो ये अशुभ और प्रतिगामी कानून दूसरे रूस के जैसा पुलिस दमन। इससे लार्ड लिटन के समय में भारत में कोई क्रान्तिकारी विस्फोट होने ही वाला था कि मिस्टर ह्यूम को ठीक मौके पर सूझी और उन्होंने इस काम में हाथ डाला।' पट्टाभि आगे लिखते हैं- '...यह देखकर ह्यूम साहब ने इस अशान्ति को प्रकट करने का एक सरल उपाय ढूढ़ निकाला जो कि हमारी यह वर्त्तमान कांग्रेस है। (अर्थात् कांग्रेस एक कुकर के रूप में स्थापित की गयी थी। जब कुकर में वाष्प का दवाब ज्यादा हो जाता है तो सेफ्टी वाल्व के द्वारा बाहर निकलने पर स्थिति सामान्य हो जाती है उसी प्रकार जब नौकरशाही का अत्याचार आदि ज्यादा हो जाय तो विरोध प्रदर्शित करने हेतु कांग्रेस एक मंच थी, भड़ास निकालने की) उक्त पुस्तक में पट्टाभि लिखते हैं '.......कांग्रेस बड़ी राजभक्त है, ब्रिटिश ताज से नहीं बल्कि हिन्दुस्तानी नौकरशाही से उसका झगड़ा है .......... ब्रिटिश पार्लियामेंट प्रजातंत्र पद्धति की माता है, ब्रिटिश विधान संसार के सब विधानों से अच्छा है। कांग्रेस राजद्रोह करने वाली संस्था नहीं है (ब्रिटिश पार्लियामेंट प्रजातंत्र पद्धति को 'माता' का दर्जा देना वह भी तब जब भारत में श्रेष्ठतम आदर्श प्रजातांत्रिक मूल्य यहाँ की शासन पद्धति तथा विधान में उपलब्ध होते हैं, माइंड लिंचिंग का ही परिणाम है। वेदप्रणीत शासन पद्धति आदर्श व प्रजातांत्रिक है। देखें- सत्यार्थ प्रकाश)

पाश्चात्य-नमन का यह भाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया। स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीयता को भारतीयता की दिशा में पल्लवित किया जा सकता था पर जिन भी लोगों के पास ऐसा करने की जिम्मेदारी और अधिकार थे उन्होंने इसके ठीक विपरीत कार्य किया। पुनः लिखना चाहेंगे कि ऐसी स्थिति में हमें अपवाद रूप में केवल एक महापुरुष मिलते हैं जो पाश्चात्य अवदान की आवश्यकता और उसकी श्रेष्ठता को ही पूर्णतः नकार देते हैं। जो लोग यह मानते हैं कि प्राचीन भारतीय संस्कृति की बात करने वाले

दकियानूसी होते हैं उन्हें यह बता दें कि इन महापुरुष की प्रगतिशीलता, क्रान्तिकारी अवधारणाओं और तार्किकता के समक्ष तत्कालीन विद्वान् पूर्वाग्रहों से ग्रस्त तथा अपनी विचारित सोच की कारा में कैद दिखायी देते हैं। हम बात महर्षि दयानन्द सरस्वती की कर रहे हैं जो अपने समय के सभी महापुरुषों व समाज सुधारकों के विपरीत भारत के प्राचीन गौरव के उन्मुक्त गायक थे, फिर भी किसी भी भारतीय कुप्रथा के सबसे बड़े विध्वंसक थे। यह बात उन्हें विशिष्ट श्रेणी में स्थापित करती है।

जब भारतीय नेतागण पाश्चात्य विद्वानों के उच्छिष्ट पर अवलम्बित थे तब दयानन्द बिना किसी संकोच के अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं- 'जितनी विद्या भूगोल में फैली है वह सब आर्यावर्त्त देश से मिश्रवालों, उनसे यूनानी, उनसे रूम और उनसे यूरोप देश में, उनसे अमेरिका आदि देशों में फैली है।' महर्षि दयानन्द स्वाभिमान के साथ प्राचीन भारत का गौरवगान करते हुए लिखते हैं- 'यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है, जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसीलिए इस भूमि का नाम सुवर्ण भूमि है, क्योंकि यही सुवर्ण आदि रत्नों को उत्पन्न करती है।'

वे आगे लिखते हैं- 'आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूने के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।' अपनी बात के समर्थन में वे मनु २/२० को उद्धृत करते हैं-

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

यहाँ दयानन्द स्पष्ट उद्घोषणा करते हैं- 'सृष्टि से लेके पाँच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एक मात्र राज्य था।' वे इसके एतिहासिक प्रमाण भी देते हैं। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में विश्वभर से नरेश जुटे थे।

आर्यों की व इनके ज्ञान-विज्ञान की श्रेष्ठता को नकारने वाले विद्वानों ने वेद के मिथ्या अर्थ करके आर्यों को शराबी, जुआरी, व्यभिचारी, अन्यायी के रूप में स्थापित किया है। महर्षि दयानन्द ने वेदों के सही अर्थ करके उनकी बखिया उधेड़ दी। पर विडम्बना यह रही कि आर्य समाजी तो देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में अत्यन्त महती भूमिका निभाने के पश्चात् अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मानकर सत्ता व्यवस्था से दूर ही रहे और इस देश की शिक्षा व्यवस्था जिन लोगों के हाथ में थी वे दयानन्द के तर्काधारित विचार को विलुप्त कर देना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने दयानन्द की विचारधारा का खण्डन करने का भी विशेष प्रयास नहीं किया क्योंकि ऐसा करने से उस तरफ लोगों का आकर्षण हो सकता था। यही कारण है आज भी मिथ्या वेदभाष्य भारतीय विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जा रहा है।

यहाँ यह समझ लेना चाहिए कि अंग्रेजों के निकट आर्यों के आक्रमण के सिद्धान्त को स्थापित करना नैतिक रूप से भी अत्यावश्यक था। यह उन्हें आक्रान्ता के आरोप से मुक्त करने का नैतिक आधार प्रदान करता है कि जब आर्य स्वयं आक्रमणकारी हैं तो वे दूसरे आक्रमणकारी की आलोचना कैसे कर सकते हैं? दूसरे अगर उन्हें आक्रमणकारी होने के नाते बाहर जाने को कहा जाता है तो आर्य लोग स्वयं पहले बाहर जायं क्योंकि वे भी तो आक्रमणकारी हैं। अंग्रेजों की इस धारणा का यद्यपि कोई प्रमाण नहीं था पर तत्कालीन और पश्चातवर्ती विद्वानों ने इसे बिना ना नुकर के निगल लिया। यहाँ तक कि तिलक जैसे राष्ट्रवादी भी इसके दुष्परिणामों को नहीं समझ सके। परन्तु महर्षि दयानन्द ने इस सम्बन्ध के सभी विदेशी स्रोतों को नकार दिया। बड़ी स्वाभाविक बात है कि जब कोई राष्ट्र या कौम किसी अन्य पर विजय प्राप्त करती है तो वे गर्वपूर्वक उसका उल्लेख अपने ग्रन्थों में करते हैं। दूसरे वे जहाँ पूर्व में रहते थे वहाँ की कुछ न कुछ स्मृति तथा उल्लेख भी उनके ग्रन्थों में आ ही जाता है, जबकि किसी भारतीय ग्रन्थ में ऐसा कुछ नहीं मिलता।

स्वामी दयानन्द लिखते हैं- 'किसी संस्कृत ग्रन्थ में वा इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आये और यहाँ के जंगलियों को लड़कर जय पाके निकाल के इस देश के राजा हुए। पुनः विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है?

'माइंड लिंचिंग' की हद यह है कि कोई यह नहीं सोचता कि इस देश का नाम आर्यावर्त्त क्यों पड़ा। रामायण, महाभारत, मनुस्मृति आदि अधिकृत ग्रन्थों में सर्वत्र आर्यावर्त्त का उपयोग क्यों है? इसका उत्तर यह है कि यह आर्यों का देश है इसलिए आर्यावर्त्त कहलाता है। अगर यहाँ आर्यों से पहले अन्य लोग रहते थे तो इस देश का नाम जो होता उसी के अनुसार यहाँ के वासी कहलाते। जैसे आज भी रूस में रहने वाले रूसी, अमेरिका में रहने वाले अमेकिन तथा चीन के वासी चीनी कहलाते हैं

उसी प्रकार आर्य आक्रमण सिद्धान्त के समर्थक यह क्यों नहीं बताते कि आर्यों से पूर्व रहने वालों का नाम क्या था? उस समय इस देश का क्या नाम था इस बात का उत्तर दिए बिना आर्य आक्रमण सिद्धान्त आधारविहीन है, पर इस पर ध्यान नहीं दिया जाता। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में कुछ ऐसे प्रश्नों का उत्तर दिया है जो अनेक विवादों को समाधित करते हैं। और हम ऐसा मानते हैं कि ये उत्तर उन्होंने अपने विशाल अध्ययन, अपनी मेधा प्रज्ञा, अपनी ऊहा, के साथ-साथ समाधिजन्य ईश्वर साक्षात्कार के बल पर दिए हैं। पाठकगण कृपया ध्यान दें।

**प्रश्न**- मनुष्यों की आदि सृष्टि किस स्थल में हुयी?

**उत्तर**- त्रिबिष्टप अर्थात् जिसको तिब्बत कहते हैं।

**प्रश्न**- फिर वे (आर्य) यहाँ कैसे आये?

**उत्तर**- जब आर्य और दस्युओं में अर्थात् विद्वान् जो देव, अविद्वान् जो असुर उनमें सदा लड़ाई बखेड़ा हुआ किया। जब बहुत उपद्रव होने लगा तब आर्य लोग सब भूगोल में उत्तम इस भूमि के खण्ड को जानकर यहीं आकर बसे, इसी से इस देश का नाम ''आर्यावर्त्त'' हुआ।

महर्षि दयानन्द आगे स्पष्ट करते हुए लिखते हैं- '........ उन सबको आर्यावर्त्त इसलिए कहते हैं कि यह आर्यावर्त्त देव अर्थात् विद्वानों ने बसाया और आर्यजनों के निवास करने से आर्यावर्त्त कहाया है।

**प्रश्न**- प्रथम इस देश का नाम क्या था?

**उत्तर**- 'इससे पूर्व इस देश का नाम कुछ भी नहीं था और न कोई आर्यों के पूर्व इस देश में बसते थे। क्योंकि आर्य लोग सृष्टि की आदि में कुछ काल के पश्चात् तिब्बत से सूधे इसी देश में आकर बसे थे।'

अब स्वामी जी आज की प्रचलित धारणाओं का स्पष्ट खण्डन करते हुए लिखते हैं कि- 'आर्य बाहर से अर्थात् अफ्रीका से अथवा मध्य एशिया से अथवा ईरान से यहाँ नहीं आये।'

**प्रश्न**- कोई कहते हैं कि ये (आर्य) लोग ईरान से आये, इसी से इन लोगों का नाम आर्य हुआ है। इनके पूर्व यहाँ जंगली लोग बसते थे कि जिनको असुर और राक्षस कहते थे। आर्य लोग अपने को देवता बतलाते थे और उनका जब संग्राम हुआ, उसका नाम देवासुर संग्राम कथाओं में ठहराया।

**उत्तर**- यह बात सर्वथा झूठ है।

स्वामी जी आगे स्पष्ट करते हैं कि वेद के अनुसार मनुष्य जाति के दो ही विभाग थे एक आर्य जो कि धार्मिक, विद्वान् और आप्त थे दूसरे इनसे विपरीत दस्यु थे जो दुष्ट स्वभाव के थे। अतः अन्य जो विभाग आज रंग भेद के आधार पर किये जाते हैं कृत्रिम हैं। सृष्टि की आदि में रूप, रंग के हिसाब से भेद नहीं था वरन् गुणों के आधार पर था। जो भद्र थे वे आर्य थे जो दुष्ट थे वे दस्यु थे। इनमें से ही आर्यजन पहाड़ी इलाके से हरिद्वार होते हुए मैदानी प्रदेश में आये। तब इस क्षेत्र का कोई नाम न था। आर्यों के बसाने से आर्यावर्त्त कहलाया। आर्यों में प्रथम विधान के रूप में मान्यता प्राप्त मनुस्मृति में तो आर्यावर्त्त की भौगोलिक सीमा भी देते हुए स्पष्ट लिख दिया है- **'तं देवनिर्मितं देशम् ब्रह्मावर्त्तं प्रचक्षते'** अर्थात् उस देव अर्थात् विद्वानों के द्वारा बसाए हुए देश को ब्रह्मावर्त (आर्यावर्त्त) कहा। यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि आर्यों में प्रतिदिन किए जाने वाले संकल्प पाठ में पढ़ा जाता है- '..... जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्त्त देशान्तर्गते ....।' परन्तु 'Mind Lynching' की इन्तहां देखिये इस पर भी ध्यान नहीं दिया जाता।

इतने स्पष्ट प्रमाणों के रहते मोहन जोदड़ो तथा हरप्पा के अवशेषों की व्याख्या इस प्रकार करके कि यहाँ पहले एक सभ्य तथा नगरीय सभ्यता से पूर्ण परिचित जाति रहती थी, फिर आर्यन (यहाँ आर्य को जानबूझकर आर्यन नाम दिया गया) यहाँ आये और उन्होंने यहाँ के निवासियों को लड़कर मारकर भगा दिया (और उनके अनुसार यही सिन्धु घाटी सभ्यता के एकाएक समाप्त हो जाने का कारण है।) और स्वयं बस गए। इन इतिहासकारों के अनुसार यहाँ कृषि का प्रवेश इन्हीं आर्यनों के साथ हुआ जो शायद ईरान से आये थे। जबकि सच यह है कि वेद में कहा है **'अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित्कृषस्व'** वेद की इस ऋचा की अनुपालना में ही आर्यों ने कृषि-क्षेत्र में पर्याप्त उन्नति कर ली थी। इस प्रकार जिन आर्यों ने सृष्टि के लगभग प्रारम्भ में आर्यावर्त्त बसाया था वे कृषि जानते थे यह भी ध्रुव सत्य है। क्रमशः ........

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

# गणतंत्रत दिवस
# की
# हार्दिक शुभकामनाएँ

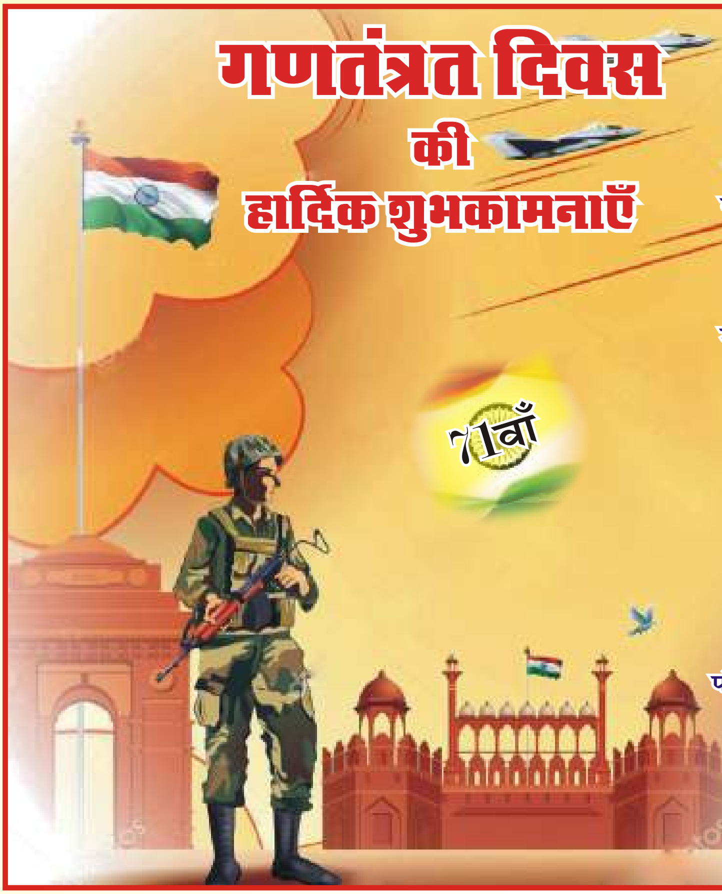


माह जनवरी छब्बीस को हम सब गणतंत्र मनाते
और तिरंगे को फहरा कर, गीत खुशी के गाते।
संविधान आजादी वाला, मित्रो ! इस दिन आया
इसने दुनिया में भारत को, नव गणतंत्र बनाया।
क्या करना है और नही क्या ?संविधान बतलाता
भारत में रहने वालों का, इससे गहरा नाता।
यह अधिकार हमें देता है, उन्नति करने वाला
ऊँच-नीच का भेद न करता, पण्डित हो या लाला
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, सब हैं भाई-भाई
सबसे पहले संविधान ने, बात यही बतलाई
इसके बाद बतायी बातें,जन-जन के हित वाली
पढ़ने में ये सब लगती हैं, बातें बड़ी निराली
लेकर शिक्षा कहीं, कभी भी, ऊँचे पद पा सकते
और बढ़ा व्यापार नियम से, दुनिया में छा सकते
देश हमारा, रहें कहीं हम, काम सभी कर सकते
पंचायत से एम.पी. तक का, हम चुनाव लड़ सकते
लेकर सत्ता संविधान से, शक्तिमान हो सकते
और देश की इस धरती पर, जो चाहे कर सकते
लेकिन संविधान को पढ़कर,मानवता को जानो
अधिकारों के साथ जुड़ें,कर्तव्यों को पहचानो

# गैया मैया

गैया को मैया कहा, रहा कसाई मार,
नहीं चुकाई दूध की कीमत तो धिक्कार।
गौ करुणानिधि को पढ़ा, जगा आत्म सम्मान,
दूध पिया फिर छोड़ दी, ओ कृतघ्न इन्सान।
बिना गाय के पंगु है, पूरा आयुर्वेद,
जिस थाली में खा रहे, करो न उसमें छेद।
हम कट जायेंगे भले, नहीं कटेगी गाय,
ऐसा लो संकल्प तब, फिर न लगेगी हाय।
जिसके अगणित सुत-सुता, वह माँ मारी जाय,
या दुष्टों को मार दे,या पड़ हीरा खाय।
'पंचगव्य' का मान कर, है संजीवन-सार,
रोग मुक्त रहना अगर, तो न गाय को मार।
हाथ फेर ले प्रेम से, रक्तचाप मिट जाये,
हृदय-रोग रहता नहीं, जिस आँगन में गाय।
करुणा की प्रतिमूर्तियाँ हैं, ममता की खान,
गौ का मतलब पशु नहीं, वत्सल हिन्दुस्तान।
यज्ञ दीप गौ घृत भरो, करो प्रदूषण दूर,
दीर्घ आयु दे विश्व को, हित-ऋत का सिन्दूर।
गोशाला हर गाँव में, करो अब अनिवार्य,
गर्व सहित हो घोषणा, हम हैं सच्चे आर्य।।

- डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी, दिल्ली

# महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वि-जन्मशताब्दी लेखमाला

सन् २०२४ में आयोज्य महर्षि द्वि-जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में, महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व को समर्पित लेखमाला का प्रथम पुष्प

– अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष-न्यास

# प्राचीन भारत के उन्मुक्त गायक महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्यावर्त्त में रहने वाले आर्यों को किस कालक्रम में और किनके द्वारा हिन्दू नाम से अभिहित किया जाने लगा और इसके पीछे क्या मानसिकता थी एवं हिन्दू शब्द के क्या अर्थ हैं इस पर अब कोई विचार आज ज्यादा स्वागत योग्य नहीं माना जाता और इस बात को भी ध्यातव्य नहीं माना जाता कि पर्शियन एवं अरेबिक शब्दकोशों में हिन्दू शब्द का अर्थ असम्मानजनक है। एक ओर जबकि 'आर्य' भद्र, सच्चरित्र, श्रेष्ठ व्यक्ति को कहा जाता है, फिर इतने सारगर्भित नाम को त्याग आर्यों ने हिन्दू नाम क्यों स्वीकार किया? इसमें उनका पराधीन होना और मध्यकाल में यह नाम शासकों द्वारा थोपा जाना ही कारण नजर आता है। जो भी हो अब व्यापक तौर पर आर्यों द्वारा हिन्दू शब्द स्वीकार कर लिया गया है अतः इस आलेख में इसका विश्लेषण न करते हुए भी इतना अवश्य लिखना चाहेंगे कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वर्त्तमान में सर्वप्रथम इस सत्य को समझा कि उदात्त व उन्नत वैदिक संस्कृति व सभ्यता तथा बुद्धिमत्ता से हिन्दुओं का सम्बन्ध नहीं जोड़ा जा सकता। वेद, ब्राह्मण, दर्शन ग्रन्थों, मनु आदि स्मृतियों के intelligence व उदात्त नैतिक मूल्यों से आर्यों का ही सम्बन्ध जुड़ सकता है हिन्दू का नहीं। यही क्यों जिन राम और कृष्ण को हम अपने दिल में बिठा अपने आराध्य पुरुष मानते हैं उनकी lineage और कभी हम राम राज्य जैसे आदर्श राज्य के संस्थापक थे, इस गौरव को जीने का भी हिन्दू को कोई आधार नहीं मिलता क्योंकि रामायण तथा महाभारत में हिन्दू शब्द के दर्शन भी नहीं होते। सर्वत्र ही हमें 'आर्य' नाम से ही अभिहित किया गया है। पाश्चात्य संस्कृत विद्वान् मोनियर विलियम्स लिखते हैं-

" you cannot find an indigenous root for the words Hindu or India. Neither are these words found in any Buddhist or Jain texts, nor any of the official 23 languages of India."

अनेक विद्वानों का मानना है कि ग्रीक आक्रमण तक हिन्दू शब्द का कहीं नाम निशान भी नहीं था। नाम परिवर्तन करने से अथवा हो जाने से, अपनी जड़ों से एक उच्चतम संस्कृति के लोगों के पृथक् हो जाने में भारत पर आक्रमण करने वाले लोगों (आक्रमणकारियों) को तो लाभ था, परन्तु हम ज्ञान-विज्ञान, शौर्य, नैतिकता, आध्यात्मिकता, राजनीति, शिल्प, ज्योतिष, दर्शन सभी क्षेत्रों में उन्नति के शिखर पर आसीन थे, हिन्दू नाम के साथ इसका दावा कैसे कर सकते थे? हाँ! अपने प्राचीन नाम आर्य को स्वीकारते ही हमारा इतिहास सृष्टि के प्रारम्भ से अविवादित रूप से जुड़ जाता है। इसीलिए महर्षि दयानन्द का प्रथम उपकार तो अपने हिन्दू भाइयों पर यही है कि उन्होंने हमसे नामभ्रष्ट न होते हुए अपने प्राचीन नाम 'आर्य' को स्वीकार करने का आग्रह किया।

वैदिक मैगजीन में सत्य ही लिखा था- 'स्वामी दयानन्द ने वैदिक संस्कृति के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला कि उसी संस्कृति के बल पर भारत अपनी आध्यात्मिक उन्नति के सर्वोच्च सोपान पर चढ़ा था।' इस सर्वोच्च संस्कृति का दावेदार बनने के लिए हिन्दुओं को बस अपने प्राचीन नाम 'आर्य' को स्वीकार करना और मध्यकाल में थोपे गए 'हिन्दू' का त्याग करना था। और इसीलिए उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है-

'यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है, जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसीलिए इस भूमि का नाम सुवर्ण भूमि है, क्योंकि यही सुवर्ण आदि रत्नों को उत्पन्न करती है।' इस प्रकार स्वामी जी ने आक्रमणकारियों के propegenda कि हिन्दुओं की अपनी कोई विकसित संस्कृति व सभ्यता नहीं है, को धूलि-धूसरित कर दिया। और ऐसा करने वाले वे अकेले महापुरुष थे।

तभी तो वेलेंटाइल चिरोल ने लिखा 'दयानन्द ने यह प्रतिपादित किया कि विदेशियों के भारत आने से पहले इस देश का स्वर्णिम युग था। (इन्डियन अनरेस्ट- मैकमिलन, लन्दन १६१०)

यहाँ यह भी संक्षेप में कह दें कि स्वामी जी ने आर्यों को ईश्वरपुत्र माना है। अर्थात् सृष्टि की आदि में 'अर्य' अर्थात् ईश्वर ने अमैथुनी सृष्टि में जिन्हें जन्म दिया वे 'अर्य-पुत्र' होने से आर्य कहलाये। दूसरे प्रारम्भ में यह नाम गुणवाचक

ही था अर्थात् श्रेष्ठ लोग आर्य कहलाते थे। सृष्टि के प्रारम्भ में सभी मनुष्य श्रेष्ठ अर्थात् आर्य थे। वेद में भी कहा है कि 'अहम् भूमिम् अददाम् आर्य्याय' (ऋग्वेद ४.२६.२) अर्थात् यह पृथ्वी आर्यों को दी गयी। इस प्रकार स्वामी जी भलीभाँति यह स्थापित कर देते हैं कि पृथ्वी पर सर्वप्रथम आर्यों ने ही जन्म लिया। हमें अपनी मूल जड़ों तक पहुँचाना उनकी बहुत बड़ी देन है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जिस समय आविर्भाव हुआ था वह आर्य जाति के उत्कर्ष का नहीं पराभव का समय था। वैसे भी महाभारत के बाद से आर्यों ने अपनी आभा को खो दिया था। परन्तु तत्समय में तो ७०० वर्ष की मुगल पराधीनता के बाद अंग्रेजों ने आधिपत्य स्थापित कर लिया था। एक ओर विशुद्ध वैदिक धर्म एवं संस्कृति विलुप्तप्रायः हो गयी थी। वेद की जीवनोत्थान की शिक्षाएँ कुछ अहम्मन्य पण्डितों के हत्थे चढ़कर अपनी सार्वजनीनता और समरसता खो चुकी थीं। वेदादेश के नाम पर अस्पृश्यता की विकराल लपटों ने मानवता को भस्मीभूत कर दिया था, स्वनिर्मित कसौटियों के आधार पर मनुष्य को पशुओं से भी बदतर समझा जा रहा था, जिसका लाभ विधर्मी भरपूर उठा रहे थे। गौरांग शासकों के समर्थन से विशेष रूप से ईसाई, हिन्दुओं को भारी संख्या में ईसाई बना रहे थे। हिन्दू स्त्रियों का जीवन नारकीय बन चुका था। बाल विवाह, विधवा विवाह निषेध, कुलीनता के आधार पर एक-एक कुलीन वृद्ध से अनेक अल्पवयस स्त्रियों का विवाह कर देना, सतीप्रथा, जन्माधारित ऊँच-नीच तथा योग्यता के तिरस्कार ने भारत को खोखला कर दिया था। तिस पर कर्मकाण्ड के नाम पर अंधविश्वास और मिथ्या क्रियाजालों ने विकृति को आधार प्रदान कर दिया था। जो देश कभी सहस्राब्दियों तक चक्रवर्ती साम्राज्य रहा था, जहाँ के विद्वानों से शिक्षा प्राप्त कर विदेशी छात्र गौरव का अनुभव करते थे, वहाँ की शिक्षा व्यवस्था ध्वस्त हो चुकी थी। वस्तुतः दयानन्द उस समय पैदा हुए जब उच्च जाति वाले हिन्दुओं ने निम्न वर्ग के लोगों के प्रति बर्बर व्यवहार करना आरम्भ कर दिया था। पश्चिम की घोर भौतिकता अपने पाँव बढ़ा रही थी, ईसाई मत हिन्दू धर्म के सभी वर्गों को लील जाने की तैयारी में था, जब गौतम और कणाद की संतान अपने वास्तविक धर्मग्रन्थों को भूल चुकी थी, जब भीष्म और शंकर के उत्तराधिकारी ब्रह्मचर्य का उपहास कर रहे थे, जब बाल विवाह होना आम बात थी, जब बाल विधवाओं तथा मृत्यु के घाट उतार दी जाने वाली गौओं के करुण क्रंदन से वातावरण शोकमग्न हो रहा था जब बहुदेवतावाद और नास्तिकता ने एकेश्वरवाद को दूर भगा दिया था, जब राम और कृष्ण के वारिस साँपों, वृक्षों तथा कब्रों की पूजा कर रहे थे। संक्षेप में अज्ञानान्धकार ने आर्यावर्त्त को ढक लिया था, वह आर्यावर्त्त जो ऋषियों की पवित्र भूमि था।

हिन्दू धर्म अपनी ही कुरीतियों के कारण इतना कमजोर हो गया था कि उस पर विधर्मी जब आक्रमण करते थे तो हिन्दू प्रत्युत्तर देने के बजाय एक कोने में दुबक जाता था। दयानन्द की चिंतनसरणि ने इन सब गिरावटों का एक ही कारण माना- वैदिक शिक्षाओं से दूर हो जाना। वेद की शिक्षाओं की जो निर्मल मंदाकिनी आर्यों के जीवन को शुद्ध, सात्विक और वैभवशाली बनाती रही, त्यागपूर्ण जीवन पद्धति के महत्त्व को सुस्थापित करती रही, वह दो कारणों से, प्रथम तो आर्यों के आलस्य और प्रमाद के कारण और दूसरे विदेशी आक्रान्ताओं के सुविचारित षड्यंत्र से शुष्क हो गयी और उसका स्थान अन्याय से परिपूर्ण जन्माधारित अस्पृश्यता, मिथ्या धार्मिक क्रियाजालों ने ले लिया। अतः दयानन्द ने वेद को न केवल पुनर्प्रतिष्ठापित किया वरन् उसका जनभाषा हिन्दी में सही-सही प्राचीन ऋषियों की पद्धति से भाष्य कर सर्वसाधारण के लिए सुलभ कर दिया। जहाँ मैकाले की कुत्सित चाल के अन्तर्गत मैक्समूलर कभी यह कहता था कि वेद गड़रियों के गीत हैं, वहीं महर्षि दयानन्द ने घोषित किया कि संसार में जितनी भी सत्य विद्याएँ हैं वे सब वेद में विद्यमान हैं। वेद ईश्वर द्वारा अपने पुत्र-पुत्रियों को प्रदत्त आचार संहिता है। मानव के कल्याण व उत्थान के लिए जो कुछ भी हो सकता है वह सब वेदों में उपस्थित है। इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका में राबर्ट इरविन करेन ने लिखा- 'स्वामी जी की मान्यता थी कि वेद में समस्त विद्याएँ विद्यमान हैं यहाँ तक कि आधुनिक विज्ञान के मौलिक नियम भी वेदमंत्रों में पाए जाते हैं।'

वेदों के सत्य ज्ञान से परिचय कराने के उनके योगदान के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए महाकवि सूर्यकान्त निराला ने लिखा- 'हमें ऋषियों की सन्तान होने का गौरव प्राप्त है और इसके लिए हम गर्व करते हैं तो कहना होगा ऋषि दयानन्द से बढ़कर हमारा उपकार इधर किसी भी दूसरे महापुरुष ने नहीं किया जिन्होंने स्वयं कुछ भी न लेकर हमें अपार ज्ञान राशि वेदों से परिचित करा दिया।'

दानापुर के बाबू माधोलाल ऋषिभक्त थे उन्होंने एक सुधारक संस्था 'हिन्दू संत सभा' का गठन किया। स्वामी जी ने इन्हें १ अप्रैल १८७८ को पत्र लिखा था जिसमें लिखा- 'केवल इसी देश से विद्या और सुख सारे भूगोल में फैले हैं क्योंकि वेद

ईश्वर की सब सत्य विद्याओं का कोष है और अनादि है। वे आगे लिखते हैं- 'आपको 'हिन्दू संत सभा' के स्थान में 'आर्य समाज' नाम रखना चाहिए क्योंकि आर्य नाम हमारा और आर्यावर्त्त नाम हमारे देश का सनातन वेदोक्त है।

वेदाध्ययन में केवल ब्राह्मणों के अधिकार व वर्चस्व को दयानन्द ने तोड़ दिया। (जबकि वे स्वयं औदीच्य ब्राह्मण थे) यह एक ऐसा क्रान्तिकारी कदम था जिसने भारत के भविष्य को दूर तक प्रभावित किया। इसी आधार पर दयानन्द ने हिन्दू धर्म में व्याप्त सभी कुरीतियों पर तीव्र प्रहार किया। दयानन्द ने वेद के आधार पर स्थापित किया कि धर्म और विज्ञान साथ-साथ चलते हैं। धर्म का प्रत्येक पहलू तर्क की कसौटी पर खरा उतरता है। धर्म के नाम पर प्रचलित अतार्किक तथा अवैज्ञानिक मान्यताओं को आस्था के नाम पर 'अविवेच्य' बनाकर स्वीकृति प्रदान कर देना दयानन्द को स्वीकार नहीं था क्योंकि वेद प्रतिपादित धर्म अंशतः भी विज्ञान के सिद्ध नियमों से विपरीत नहीं है, यह दयानन्द की स्थापना थी। अतः धर्म के नाम पर पलने वाले अंधविश्वासों

को आधार बना जो विदेशी मिश्नरी हिन्दू धर्म पर तीव्रतम आक्रमण कर रहे थे और अपनी निर्बलता के कारण हिन्दू दुबका बैठा था वहीं दयानन्द ने असत्य और सृष्टिक्रम से विरुद्ध सभी मान्यताओं को त्याग, विदेशी मिश्नरियों को आलोचना का आधार ही न मिले ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी, साथ ही उन्होंने बायबिल तथा कुरआन का अध्ययन कर उनकी अविश्वसनीय और बेसिरपैर की बातों के परखच्चे उड़ा दिए। अब बारी मिश्नरियों के दुबकने की थी। ऐसा दयानन्द के अतिरिक्त किसी महापुरुष ने नहीं किया था। दयानन्द ने हिन्दू धर्म के निस्तेज चेहरे को आत्मगौरव के ओज से आप्लावित किया। रामधारी सिंह दिनकर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय में लिखा है- 'ईसाईयत और इस्लाम के आक्रमणों से हिन्दुत्व की रक्षा करने में जितनी मुसीबतें आर्य समाज ने झेली हैं उतनी किसी और संस्था ने नहीं। सच पूछिए तो उत्तर भारत में हिन्दुओं को जगाकर उन्हें प्रगतिशील करने का सारा श्रेय आर्य समाज को ही है।'

'धर्म क्या है? इस बात को लेकर तत्समय में और सच कहा जाय तो आज भी बुद्धिजीवी भ्रमित हैं, परन्तु दयानन्द को कोई भ्रम नहीं था। उन्होंने धर्म के सही स्वरूप को हमारे सामने रखा जो प्रगतिशील है, क्रान्तिकारी है तो शाश्वत व पूर्णतः तर्काधारित भी है।

'रिलीजन इन इण्डिया' में केनेथ डब्ल्यू जोन्स ने सही लिखा है- 'दयानन्द द्वारा प्रतिपादित धर्म एकेश्वरवादी था जो सबके लिए खुला था, तर्कपूर्ण था तथा आधुनिक विज्ञान से जिसका समन्वय स्थापित किया जा सकता था। यही एक सत्य धर्म था।'

धर्म के इस वैज्ञानिक स्वरूप को प्रस्तुत कर स्वामी जी ने अपने किले को सुरक्षित कर, सेमेटिक मजहबी अवैज्ञानिक मूर्खताओं की पोल खोल दी। इस नयी परिस्थिति में धर्मान्तरण में प्रवृत्त ईसाइयों तथा मौलवियों के न केवल कदम थम गए वरन् पूर्व में धर्मान्तरित किये गए हिन्दुओं की घर वापिसी के द्वार जो हिन्दुओं ने बंद कर रखे थे वे खुल गए क्योंकि वैदिक धर्म पर तथा वेदाध्ययन पर दयानन्द ने मनुष्य मात्र के अधिकार को वेद के ही मन्त्र को प्रस्तुत कर स्वीकार कर लिया था। स्वामी जी ने **'यथेमां वाचं कल्याणी मा वदानि जनेभ्यः...'** मन्त्र को प्रस्तुत कर यह सिद्ध कर दिया कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अतिशूद्र एवं स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार है। ऐसा करके वे भारत के प्रत्येक नागरिक को श्रेष्ठ ज्ञान से युक्त करना चाहते थे ताकि राम और कृष्ण के वंशज गौरव से सर उठाकर जी सके।

इसी बात को एच.डी. ग्रिसवार्ड ने लिखा है- 'दयानन्द यह मानते थे कि आधुनिक भारत के अधोगति प्राप्त बच्चों के हृदयों को वह गौरवशाली वैदिक युग के उनके पूर्वजों के तुल्य बना सकते थे।'

दयानन्द को हिन्दू धर्म का अधःपतन स्वीकार्य नहीं था। उनके द्वारा किये गए खंडन कार्य को जब हिन्दू धर्म में आयी विकृतियों को दूर कर, उसके सुधार की उनकी प्रबल इच्छा के सन्दर्भ में देखेंगे तभी उनके आशय को हम समझ सकेंगे। जे. रीड ग्राहम लिखते हैं- 'जिन लोगों ने उनके प्रवचन सुने थे, वे ये अनुभव करते थे कि दयानन्द हिन्दू धर्म की विकृतियों की ही निन्दा कर रहे हैं, इसलिए नहीं कि हिन्दू धर्म को नष्ट किया जाए, अपितु उसे बचाया जाए, उसका सुधार किया जाए जिससे कि हिन्दुओं को ऐसी नवीन शक्ति मिले ताकि वे ईसाइयत और इस्लाम के हमलों को रोकने में समर्थ हों। उन्हें भय था कि अगर ऐसा नहीं किया गया तो ईसाइयत और इस्लाम भारत में प्रभावपूर्ण स्थिति में आ जायेंगे। यहाँ यह और लिख दें मत-स्वीकार्यता का दयानन्द का मार्ग लोभ या दबाब न होकर वैचारिक विमर्श था।

क्रमशः......

# क्या आर्य समाज का स्वर्ण युग फिर आयेगा?

आर्य समाज एक प्रगतिशील संस्था है, जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रजातंत्र के आधार पर १८७५ में की थी। इतने अल्प समय में इस संस्था का काफी विस्तार हुआ। इसका लक्ष्य वेद का आदेश **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** अर्थात् संसार के लोगों को आर्य श्रेष्ठ और सदाचारी बनाना है। इसके दस नियम मानव कल्याण के दस सूत्र हैं। छठे नियम में आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना कहा गया है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। इस तरह आर्य समाज एक राष्ट्रीय संस्था है।

आर्य समाज वेद को अपना धर्म ग्रन्थ मानता है, जो ईश्वरीय ज्ञान है और संसार में सबसे पुराना है। इस समय हमारे देश में लगभग ५००० आर्य समाजें हैं तथा २००० के लगभग विदेशों में आर्य समाजें हैं, जो वेद के प्रचार में लगी हैं। इनके अतिरिक्त ६०० के लगभग डी.ए.वी. स्कूल कॉलेज तथा जालन्धर में डी.ए.वी. विश्वविद्यालय है जो विद्यार्थियों को नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा भी दे रहे हैं। इनके अतिरिक्त लड़के और लड़कियों के अनेक गुरुकुल भी हैं। कई अनाथालय तथा निःशुल्क औषधालय भी कार्यरत हैं।

जिन लोगों की आयु इस समय ८० साल अथवा अधिक है, उन्होंने आर्य समाज का स्वर्ण युग देखा है जबकि सारे उत्तर भारत में आर्य समाज के प्रचार की धूम मची थी। बड़े-बड़े

जुलूस निकलते थे। हजारों व्यक्ति आर्य समाज के उत्सवों में आते थे। महर्षि दयानन्द ने ही हमें बताया कि हमारा प्राचीन नाम आर्य है और हिन्दू नाम किसी धर्म ग्रन्थ में नहीं लिखा। वेद के अनुसार ईश्वर निराकार है, जिसकी कोई मूर्ति नहीं है। योग साधना से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है। आर्य समाज ने ही लुप्त हो रही हवन यज्ञ की प्रथा को फिर से चालू किया तथा यज्ञ में मांस डालने का विरोध किया। उस समय लाहौर (अब पाकिस्तान) में आर्य समाज के प्रचार का बड़ा केन्द्र था।

आर्य समाज का आन्दोलन एक सुधारवादी आन्दोलन था, जो कि बाल विवाह, सती प्रथा का विरोधी था। तथा विधवा विवाह का समर्थक था तथा महिलाओं को शिक्षित करके पुरुषों के बराबर अधिकार देने का समर्थक था। इसने मत मतान्तरों की किसी भी अच्छी और सच्ची बात का विरोध नहीं किया, किन्तु पाखण्ड और अन्धविश्वास का विरोध किया।

महर्षि दयानन्द से प्रभावित होकर उस समय लेखराम, गुरुदत्त, हंसराज, लाला लाजपतराय, मुंशीराम जैसे कई युवक आर्य समाज के प्रचार में जुट गए थे।

शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, रामप्रसाद बिस्मिल, सोहन लाल पाठक, चन्द्रशेखर आजाद जैसे कई युवक महर्षि दयानन्द से प्रभावित होकर देश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान हो गए।

उस समय आर्य समाज के विद्वानों पंडित रामचन्द्र देहलवी, पंडित शान्ति प्रकाश, पंडित मनसाराम 'वैदिक तोप', महात्मा आनन्द स्वामी, महाशय कृष्ण इत्यादि ने वेद प्रचार की धूम मचा रखी थी तथा सब मत मतान्तर के लोगों अर्थात् विद्वानों को शास्त्रार्थ में हराकर विजय प्राप्त की थी। इनके प्रचार में स्थान-स्थान पर आर्य समाजें स्थापित हो रही थीं। परन्तु अब कोई भी विद्वान् मुकाबले के लिए आगे नहीं आ रहा। अब टीवी चैनलों पर मुकाबला होना चाहिए तभी सत्य असत्य का निर्णय होगा।

आर्य समाज ने महात्मा गाँधी से भी पहले अछूतोद्धार का कार्य आरम्भ कर दिया था और उन्हें दलित नाम दिया था। कई दलितों को विद्वान् बनाकर आर्य समाज में पुरोहित रखा

गया। महात्मा गाँधी के सत्याग्रह में भी अधिकांश लोग आर्य समाजी थे-ऐसा कांग्रेस के इतिहास में वर्णन किया गया है।

हमारे देश पर लगभग ६०० साल तक विदेशी शासन रहा। उस समय लाखों लोगों का धर्म परिवर्तन किया गया। मंदिरों को लूटा गया, मूर्तियाँ तोड़ी गईं तथा उन जगहों पर मस्जिदें बनाई गईं। हिन्दू लोग किसी को अपने धर्म में शामिल नहीं करते थे। सबसे पहले इस युग में महर्षि दयानन्द ने मोहम्मद उमर नाम के एक व्यक्ति को शुद्ध करके वैदिक धर्मी बनाया। उसके बाद आर्य समाज के नेताओं ने शुद्धि आन्दोलन शुरू किया, जो अब तक चल रहा है।

१६३६ में हैदराबाद के निजाम ने आर्य समाज के प्रचार पर पाबन्दी लगा दी, इसलिए आर्य समाज को वहाँ जाकर सत्याग्रह करना पड़ा जिसमें कई हजार व्यक्तियों ने भाग लिया, दो दर्जन के लगभग लोग निजाम की जेलों में शहीद हो गए। आखिर निजाम को आर्य समाज के प्रचार पर लगी पाबन्दी हटानी पड़ी।

बड़ी कुर्बानियों के बाद हमारा देश १५ अगस्त १६४७ को स्वतंत्र हो गया, पर भारत और पाकिस्तान दो देशों में विभाजित हो गया। लाखों व्यक्ति दोनों तरफ परस्पर झगड़ों में मारे गए और अरबों रुपए की सम्पत्ति आर्य हिन्दुओं की पाकिस्तान में रह गई परन्तु लोगों ने हिम्मत नहीं हारी और शरणार्थी बनकर आर्य लोगों ने नई आर्य समाजें स्थापित कर दीं।

परन्तु अब कुछ समय से आर्य समाज का प्रचार घट गया है। संन्यासी और विद्वान् कम हो गए हैं, इसलिए पाखण्ड और अन्धविश्वास बढ़ रहा है। मीडिया में आर्य समाज का नाम तक नहीं है। साप्ताहिक सत्संगों में हाजरी कम हो रही है। कुछ स्वार्थी लोग चुनाव सम्बन्धी मुकदमेबाजी कर रहे हैं जिससे लाखों रुपया व्यर्थ बरबाद हो रहा है। सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा छिन्न-भिन्न हो चुकी है तथा प्रदेशों में भी कई-कई प्रतिनिधि सभाएँ बन गई हैं। इसलिए आर्य समाज की छवि धूमिल हो रही है। आर्य समाजियों के अधिकांश परिवार आर्य नहीं रहे हैं। पुराने सदस्य अब दिवंगत हो रहे हैं और नए बन नहीं रहे हैं। इस तरह आर्य समाज कब तक चलेगा? हमारा कोई टी.वी. चैनल भी नहीं है। पूर्वी और दक्षिणी भारत में आर्य समाज का प्रचार ही नहीं है।

महर्षि दयानन्द ने कहा था कि आर्य समाज कोई नया मत अथवा सम्प्रदाय नहीं है। मेरा धर्म तो सत्य सनातन वैदिक धर्म है। उन्होंने ३१ दिसम्बर १८८० को आर्य समाज मुलतान के मंत्री मास्टर दयाराम वर्मा को यह पत्र लिखा था कि- आर्य समाज के लोग जनगणना में धर्म के खाने में वैदिक धर्म और जाति के खाने में आर्य लिखावाऐं, परन्तु आर्य समाज के नेताओं ने इस पर ध्यान नहीं दिया और अपने को हिन्दू लिखते-लिखाते आ रहे हैं, इसलिए आर्य समाज की वर्तमान दशा पर विचार करने के लिए किसी विद्वान् अथवा महान् संन्यासी द्वारा एक चिन्तन सभा/संगोष्ठी बुलाने की आवश्यकता है जिसमें विचार करके उचित निर्णय लिए जायें। हिन्दू तो कोई धर्म ही नहीं है और आर्य समाज के लोग वैदिक धर्म की जय के थोथे नारे ही लगा रहे हैं।

धर्म अथवा मत के मानने वाले लोग अपने-अपने धर्म के बड़े पक्के होते हैं और धर्म के सिद्धान्तों पर चलते हैं। जिस तरह मुसलमान का बेटा मुसलमान, ईसाई का ईसाई होता है, ऐसे ही आर्यों की सन्तान भी अपने आपको वैदिक धर्मी माने। जबकि आर्य समाजी की सन्तान आवश्यक नहीं कि आर्य समाजी ही हो, क्योंकि आर्य समाज तो कोई धर्म नहीं है, इसलिए आर्य समाजियों की संख्या घट रही है। संसार में वैदिक धर्म की स्थापना करना अब आवश्यक है। आर्य नेता सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन बुलाकर यह घोषणा करें कि सब आर्यजन सर्वत्र अपना धर्म वैदिक ही लिखें लिखाएँ तभी आर्य समाज की उन्नति होगी। पाखण्डी साधुओं और बाबाओं से सावधान करने में भी आर्य समाज को आगे आने की आवश्कयता है। मूर्तियाँ किसी की रक्षा नहीं करतीं। मंदिरों में आए दिन चोरियाँ होती रहती हैं।

बाल विवाह तथा कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक बुराइयाँ दूर करने में भी आर्य समाज को अग्रसर होना चाहिए। हम लोग हिन्दुओं से अलग नहीं हैं परन्तु हमारे धर्म का नाम वैदिक धर्म है और यह नहीं भूलना चाहिए। मैं दस साल से यह प्रचार कर रहा हूँ। इसलिए वेद प्रचार की भी योजना बनाई जाए तथा सार्वदेशिक सभा की मुकदमेबाजी समाप्त कराने के लिए इसका चुनाव किसी नेता द्वारा हाइकोर्ट की मंजूरी से कराया जाए। इसके बाद सार्वदेशिक सभा तथा प्रदेशों की सभाओं को न्यास की तरह चलाया जाए। मुकदमे करने वाले लोग आर्य समाज से पृथक् हो जाएँ तभी कल्याण होगा।

आर्य समाज द्वारा विवाह समारोह सादगी से कराए जाने आवश्यक हैं। इस समय आर्य समाज का कोई सर्वमान्य नेता भी नहीं है इसलिए आर्य महासम्मेलन बुलाकर पाँच कर्मठ संन्यासी/विद्वानों की समिति बनाई जाए, जो मार्गदर्शक मण्डल कहलाए और सब लोग उनकी आज्ञा मानें, तभी आर्य समाज का स्वर्ण युग फिर आयेगा।

हमारे देश में महिलाएँ सुरक्षित नहीं हैं इसलिए उनसे छेड़खानी और बलात्कार के केस बढ़ रहे हैं। दोषियों को कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए। दहेज के लिए भी महिलाओं को प्रताड़ित किया जा रहा है। कन्या भ्रूण हत्याएँ भी बहुत हो रही हैं। आर्य समाज को इस बारे में आन्दोलन करना चाहिए। बाल-विवाह रोकने के लिए भी सरकार से सख्त कानून बनवाना चाहिए। आर्य समाज के अधिकारियों को अपने मंदिरों से बाहर निकल कर वेद प्रचार करना चाहिए तभी जनता आर्य समाज से जुड़ेगी। सब मनुष्यों को अपने भाग्यानुसार एक ईश्वर की व्यवस्था से सुख-दुःख, हानि लाभ इत्यादि प्राप्त होते हैं, इसलिए शुभ कर्म ही करने चाहिए।


– अश्विनी कुमार पाठक

बी ४/२५६ सी, केशवपुरम्, दिल्ली-११००३४

दूरभाष- ०११-२७१०१६३६



**न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश**

**₹100 के स्थान पर अब ₹45 में उपलब्ध**

**सौ प्रतियाँ लेने पर ₹4000**

**(डाक खर्च अतिरिक्त)**

**₹15000 सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग राशि देकर एक हजार प्रतियों पर अपना वा अपने किन्हीं परिचित का विवरण फोटो सहित छपवावें।**


### मानव निर्माण शिविर सम्पन्न

भिनायकोठी, अजमेर राजस्थान, में दिनांक २८ व २६ दिसम्बर २०१६ को दो दिवसीय मानव निर्माण शिविर सम्पन्न हुआ जिसमें न्यास के कार्यकारी प्रधान डॉ. श्रीगोपाल बाहेती, पूर्व विधायक, पुष्कर, पंडित रामस्वरूप आर्य एवं आचार्य श्रीगोविन्द सिंह विद्यालंकार व अन्य विद्वद्जनों ने प्रेरक उद्बोधन प्रदान किए।

### आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री का सम्मान

ज्ञान फाउण्डेशन द्वारा आयोजित भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी की स्मृति में 'अतुल्य अटल सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता' के अवसर पर वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री का, कार्यक्रम के संयोजक श्री राजकुमार जी ग्रोवर के द्वारा शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया गया। आचार्य जी को बधाई एवं शुभकामनाएँ।

पूरा नाम–
चलभाष–

## सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०१/२०

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या–

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (नवम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मु | १ | ■ | २ | रा | २ | २ | ल २ | ३ | य ३ |
| ४ उ | ४ | द ४ | ■ | ५ न | ५ | ■ | ६ | ध ६ | ६ |
| ७ | र्म ७ | ■ | ८ ध | ८ | च ८ | ८ | ण ८ | ९ | च ९ |

**संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।**

१. दुःख का अत्यन्त विच्छेद क्या कहलाता है?
२. मुक्ति काल क्या कहलाता है?
३. ईश्वर अन्त वाले कर्मों का अनन्त फल देवे तो क्या नष्ट हो जाये?
४. जो मुक्ति से कभी भी कोई भी जीव न लौट कर आए तो संसार का क्या हो जाये?
५. जितने जीवों की मुक्ति होती है क्या परमेश्वर उतने ही जीव उत्पन्न कर संसार में रख देता है?
६. जो जीव दुःख को छुड़ाना और सुख को प्राप्त होना चाहे उसको क्या अवश्य छोड़ देना चाहिए?
७. जो जीव दुःख को छुड़ाना और सुख को प्राप्त होना चाहे उसे क्या अवश्य करना चाहिए?
८. सुख का मूल कारण क्या है?
९. कोश कितने हैं?

**सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ११/१९ का सही उत्तर**

१. चौबीस २. महामूढ़ ३. मुक्ति ४. अभाव
५. आकाश ६.सत्यकाम ७. परमात्मा

**"विस्तृत नियम पृष्ठ १७ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"**

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ फरवरी २०२०

# ईश्वर की उपासना दुःखों के निवारण एवं सद्गुणों की प्राप्ति के लिए करते हैं

अधिकांश मनुष्य प्रायः ईश्वर की भक्ति व उपासना करते हैं। संसार में अनेक प्रकार की उपासना पद्धतियाँ प्रचलित हैं। कुछ तो ऐसी हैं जो मनुष्य को मंजिल वा लक्ष्य से दूर भी करती हैं। उपासना करने का कारण भी अवश्य कुछ है? वह क्या है, इसका उत्तर वेद एवं वैदिक साहित्य पढ़ने के बाद सामने आता है। वह यह है कि ईश्वर सब गुणों, सुखों व आनन्द का स्रोत है। मनुष्य को यदि सद्गुणों की प्राप्ति करनी है तो वे उस स्रोत को पाने व उनमें स्नान कर ही प्राप्त हो सकते हैं। इसी के लिये हम ईश्वर की उपासना करते हैं। मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी है। इस अल्पज्ञता के कारण वह अज्ञानतावश अथवा स्वाध्याय एवं सत्य गुणों के महत्व को न जानने के कारण स्वार्थ, काम, क्रोध, मोह, लोभ, इच्छा, द्वेष आदि दुर्गुणों व दुर्व्यसनों में फंस जाता है। इनसे मुक्त होने का एक ही उपाय है और वह है स्वाध्याय से दुर्गुणों व दुर्व्यसनों का ज्ञान प्राप्त कर ईश्वर की उपासना करना, उसके स्वरूप, गुण, कर्म व स्वभाव का ध्यान करके इन दुःख आदि से मुक्त होना है। जिस प्रकार हमारे वस्त्र मैले या दूषित होने पर हम उसे साबुन लगाकर रगड़ते व पीटते हैं, उसी प्रकार से परमात्मा का ध्यान व चिन्तन करने से परमात्मा हमारी आत्मा के दुर्गुणों व दुर्व्यसनों को चिन्तन-मनन व सत्यसंकल्प की घर्षण प्रक्रिया से दूर कर देते हैं और हमारा आत्मा दुर्गुणों से रहित व सद्गुणों से पूरित हो जाता है।

मनुष्य को, दुर्गुणों को धारण करने से, इस जन्म व परजन्म में भी हानि होती है और सद्गुणों वा सदाचार को धारण करने पर इस जन्म व परजन्म में लाभ होता है। सद्गुणों का धारण करने वाला मनुष्य सन्तुष्ट व प्रसन्न रहता है तथा दुर्गुणों से युक्त मनुष्य सदैव अप्रसन्न, भयातुर एवं दुःखी देखा जाता है। यदि एक मनुष्य दुःखी है तो उसकी परिस्थितियों व स्वभाव आदि सहित उसके जीवन पर दृष्टि डालने से उसके दुःखों के कारणों का अनुमान किया जा सकता है। मनुष्य के दुःखों का कारण सदैव अज्ञान सहित उसके अतीत व वर्तमान के अशुभ व पाप कर्म ही हुआ करते हैं। मनुष्य तो अपने अतीत के अधिकांश शुभ व अशुभ कर्मों को भूल चुका होता है परन्तु ईश्वर के ज्ञान व व्यवस्था में वह कर्म बिना भोगे नष्ट व निर्मूल नहीं होते। इन अशुभ व पाप कर्मों का कारण मनुष्य के दुर्गुण व अशुभ कर्म ही हुआ करते हैं। इसी कारण इनको दूर करना आवश्यक होता है। वैदिक धर्म का प्रयोजन व आधार ही मनुष्य को सद्ज्ञान कराकर अशुभ व दुर्गुणों को दूर करना व उसे सद्गुणों व सद्ज्ञान से युक्त करना होता है। हम जब विद्या प्राप्ति में पुरुषार्थ करते हैं तो यह हमारा सद्गुण व सद्कर्म होता है। इससे हमें वर्तमान व भविष्य में सुख मिलते हैं। यदि हमें यह ज्ञान हो कि विद्या प्राप्त करने के बाद हमें क्या-क्या लाभ होंगे तो हम अवश्य ही विद्या प्राप्ति में पुरुषार्थ व तप करेंगे। आज का वातावरण ऐसा है कि न तो माता-पिता तथा न ही स्कूल व कॉलेजों में बच्चों को विद्या के महत्व की जानकारी दी जाती है। इसी के अभाव में मनुष्य दुर्गुणों से युक्त होकर दुःख पाता है। हमें इसके पीछे देश की शिक्षा-नीति भी प्रमुख कारण प्रतीत होती है। यदि हमारी स्कूली शिक्षा में हमें वेद, दर्शन, उपनिषदों, सत्यार्थप्रकाश, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि तथा पंचमहायज्ञविधि आदि को पढ़ाया जाता तो हमारा जीवन वर्तमान जीवन से सर्वथा भिन्न एवं सत्य ज्ञान से युक्त होता। इस प्रयोजन की पूर्ति आर्यसमाज में जाने व ऋषि दयानन्द सहित आर्य विद्वानों के ग्रन्थों व लेखों को पढ़ने से होती है। स्वाध्याय, उपासना व ज्ञान का अभाव ही मुख्यतः हमसे पाप कर्म करवा रहा है तथा इस जन्म व परजन्म में हमारे दुःखों का कारण बन रहा है।

वेदों में कहा गया है कि विद्या अर्थात् सद्ज्ञान से मनुष्य को

अमृत, सुख व मोक्ष की प्राप्ति होती है। अमृत का एक अर्थ यह भी है कि विद्या से मनुष्य अमृत अर्थात् मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेता है। जो मनुष्य अमृत को प्राप्त करता है उसका पुनर्जन्म न होकर वह मोक्षावस्था में ईश्वर के आश्रय से सुखों को भोगता है। यही कारण था कि आदि काल से हमारे पूर्वज ऋषि, मुनि, राम, कृष्ण, दयानन्द, पतंजलि, कपिल, कणाद, गौतम, व्यास आदि वेद मार्ग पर चलते हुए विद्या प्राप्ति और सदाचरण सहित ईश्वरोपासना,

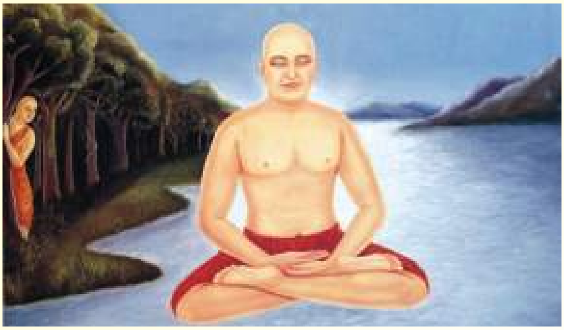

अग्निहोत्र-यज्ञ, परोपकार तथा समाज व देश हित के कार्यों को महत्व दिया करते थे। हमें इन सब विद्वान् पूर्वजों के जीवन से शिक्षा लेनी है। यदि हम इनके जीवन व कार्यों का अनुकरण करेंगे तो हमें अवश्य ही लाभ होगा और हम इस जन्म व परजन्म में दुःखों से बच सकेंगे।

यह भी उल्लेख कर दें कि हमारा शरीर कार्य करने पर थक जाता है और उसे भूख लगती है। शरीर की भूख का निवारण भोजन, फल, दुग्ध व जल आदि से हो जाता है परन्तु हम यह विचार नहीं करते कि हमारी आत्मा को क्या चाहिये। वह किस वस्तु से सुखी व सन्तुष्ट होगी? हम अपनी आत्मा की आवाज की उपेक्षा करते हैं। आरम्भ में तो आत्मा हमारे मन में अनेक प्रकार की शंकायें उत्पन्न करती है परन्तु जब इनका समाधान वा निवारण नहीं होता तो हम आत्मा में उठने वाले उन प्रश्नों की उपेक्षा करने लगते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि आत्मा में ईश्वर की प्रेरणा व स्वभाव से उठने वाली शंकायें होना बन्द हो जाती हैं। आत्मा में उठने वाली शंकायें हैं- 'यह संसार किसने, कब व कैसे बनाया, मैं कौन हूँ, मृत्यु से पूर्व मैं कहाँ था, मरने के बाद मेरी आत्मा का अस्तित्व रहेगा या नहीं, यदि नहीं रहेगा तो आत्मा जिस चेतन तत्व से बना हुआ अनादि पदार्थ है, उसकी विकृति किस रूप में होगी? यदि आत्मा का अस्तित्व रहेगा तो क्या पुनर्जन्म होगा? होगा तो मैं मनुष्य ही बनूँगा या किसी पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि देह वा योनि में भी जन्म ले सकता हूँ या मनुष्य ही बनूँगा?' ऐसे सैकड़ों प्रश्न हैं जिनका उत्तर हमें वेद, दर्शन, उपनिषद्, सत्यार्थप्रकाश, व्यवहारभानु तथा मनुस्मृति आदि ग्रन्थों के अध्ययन से प्राप्त हो जाता है।

हम भाग्यशाली हैं कि हमें इन विषयों का ज्ञान है। जिन मनुष्यों ने ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों सहित इतर वैदिक साहित्य को पढ़ा है वे भी भाग्यशाली हैं। परन्तु यदि ऐसे बन्धु अच्छे धनाढ्य भी हैं तो वह पूरे भाग्यशाली नहीं है। अत्यधिक धन सीमा से अधिक सुख का परिणाम न होकर परिणाम में दुःख देने वाला होता है। अधिक धन दौलत से मनुष्य सुख की वस्तुयें तो प्राप्त कर सकता है परन्तु सुखोपभोग में सहायक

इन्द्रियों को बलवान एवं निरोग नहीं रख सकता। प्रकृति का नियम है कि अधिक सुख व सुविधाओं से हमारा शरीर अस्वस्थ व निर्बल हो जाता है और इससे शरीर अधिक सुख भोग नहीं कर सकता। यही कारण है कि मनुष्य को भोगी नहीं योगी बनना चाहिये जब कि आज की स्कूली शिक्षा योग न सिखाकर प्रचुर मात्रा में भोग के साधनों को एकत्र करने की प्रेरणा करती है। मनुष्य इतने अधिक साधन व सम्पत्ति एकत्र कर लेता है कि उनका भोग भी नहीं कर पाता और मृत्यु आने पर सब कुछ छोड़ कर चला जाता है। उसकी कमाई यह वस्तुयें उसके साथ नहीं जातीं। केवल अच्छे काम व पुण्य-पाप कर्म ही साथ जाते हैं। धनोपार्जन व सम्पत्ति अर्जित करने में उसे जो सत्य आचरण से विमुख होना पड़ता है उसका परिणाम कर्म-फल सिद्धान्त के अनुसार दुःखों के रूप में सामने आता है जो शारीरिक रोग व अन्य अनेक दुःखों के रूप में हो सकते हैं।

हमारे समाज में माता-पिताओं को अपने और अपनी सन्तानों के हित के लिये स्वयं भी पंचमहायज्ञ विधि का अध्ययन कर प्रातः व सायं ईश्वरोपासना तथा अग्निहोत्र (देवयज्ञ) करना चाहिये। इससे उनकी सन्तानों व परिवार के सभी सदस्यों पर अच्छे संस्कार पड़ेंगे। इसके अभ्यास से वह नास्तिकता से दूर रहेंगे। साथ ही वह अपने माता-पिता से प्राप्त संस्कारों व ज्ञान से अपने सभी कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। उपासना वस्तुतः आत्मा और परमात्मा को जोड़ने व उन्हें आपस में मिलाने की एक क्रिया है। इस क्रिया को प्रतिदिन बिना बाधा दीर्घकाल तक करने से आत्मा के दुर्गुण,

दुर्व्यसन और दुःख दूर हो जाते हैं। इससे आत्मा का ज्ञान भी बढ़ता है और सत्कर्मों को करने की प्रेरणा भी मिलती है। सद्‌कर्मों को करने में कर्त्ता को ईश्वर का सहाय प्राप्त होता है। ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि- 'उपासना से मनुष्य में निर्भीकता एवं साहस की वृद्धि होती है। उसकी दुःखों को सहन करने की शक्ति में वृद्धि होती है। बड़े से बड़े दुःख को भी वह आसानी से सहन कर सकता है।' ऋषि के शब्दों में 'पहाड़ के समान दुःख प्राप्त होने पर भी वह (भक्त व उपासक) घबराता नहीं है। क्या यह छोटी बात है?' ऋषि दयानन्द ने जो कहा है वह सर्वथा सत्य है। अतः हमें दुःख पर विजय पाने के लिये ईश्वर की भक्ति व उपासना जिसमें योगाभ्यास, ध्यान व समाधि का अभ्यास सम्मिलित है, अवश्य ही करनी चाहिये। उपासना से आत्मा की भूख शान्त होती है। आत्मा अशुद्धियों से दूर होकर शुद्ध व पवित्र बनता है। ऐसे मनुष्य की आयु, विद्या, यश व बल सभी बढ़ते हैं। यह चार बातें ही मनुष्य की सबसे बड़ी पूंजी हैं। इन्हें उपासना सहित वृद्धों की सेवा करके भी प्राप्त किया जा सकता है। हमें यह भी अनुभव होता है कि जो मनुष्य उपासना नहीं करता वह वस्तुतः नास्तिक होता है और ईश्वर के उपकारों के प्रति कृतज्ञ न होकर कृतघ्न होता है। अतः अनेक लाभों को प्राप्त करने व कृतघ्नता से बचने के लिये उपासना अवश्य ही करनी चाहिये।

-मनमोहन कुमार आर्य
१९६ चूक्खूवाला-२, देहरादून- २४८००१ ( उत्तराखण्ड )

## सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

| राशि | प्रतियों की संख्या | राशि | प्रतियों की संख्या |
|---|---|---|---|
| १५०००० | दस हजार | ११२५०० | ७५०० |
| ७५००० | ५००० | ३७५०० | २५०० |
| १५००० | १००० | इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे। | |

**आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा।** राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य
मंत्री-न्यास

भंवरलाल गर्ग
कार्यालय मंत्री

डॉ.अमृत लाल तापड़िया
उपमंत्री-न्यास

## आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यॉमार) स्मृति पुरस्कार

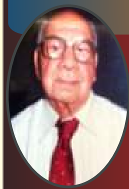

## "सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

### कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक ( १ ) के स्थान पर चार ( ४ ) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - ( अ ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - ( ब ) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - ( स ) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - ( द ) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन ( लाट्री द्वारा ) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

## ₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
## "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

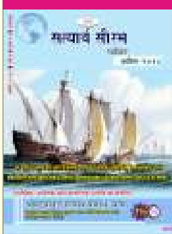

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

# अर्द्धांगिनी ही बनाती पुरुष को सुपूर्णांगी

बादशाह अकबर की अंगुली में चोट लग गयी और पट्टी बाँध दी गई। उन्होंने अपने नवरत्नों में से सहबोला मंत्री बीरबल को घायल अंगुली दिखाते हुए सहानुभूति की अपेक्षा की। पर बीरबल बोल पड़े 'ईश्वर जो करता है अच्छा ही करता है।' यह सुनकर अकबर को क्रोध आ गया और बीरबल को बन्दी बना दिया। अकबर सदैव बीरबल के साथ भ्रमण पर

निकलते थे, अब उन्हें अकेले ही जाना पड़ा। जंगल में देवी के स्थान पर पूजा पाठ चल रहा था। भक्त लोग क्या जानें ये बादशाह हैं, हृष्ट-पुष्ट देखकर अकबर को पकड़ लिया गया। सभी प्रक्रियायें पूर्ण कर जब बलि चढ़ाई जाने लगी, तो प्रमुख पुजारी ने उनकी घायल अंगुली को देख लिया, अपूर्णांग होने के कारण उन्हें बलि से छुटकारा मिल गया। उन्होंने राजधानी पहुँचकर सर्वप्रथम बीरबल को मुक्त किया और अपनी आप बीती बताकर उनके कथन का समर्थन किया- 'ईश्वर जो करता है अच्छा करता है।' पर उन्होंने शंका प्रकट की- 'बीरबल! तुम्हारे साथ ईश्वर ने क्या अच्छा किया? तुम्हें बन्दी बना दिया गया।' उन्होंने उत्तर दिया- 'हुजूर! बहुत अच्छा किया। मैं सदा आपके साथ रहता हूँ। उस भीड़ द्वारा बलि चढ़ाते समय अंग-भंग के कारण आपको छोड़ दिया जाता और मुझे पकड़ लिया जाता।'

जब जड़ देवताओं के पूजन के लिए बलि का पूर्णांग होना वांछनीय है, तब सजीव संसार के संचालन के लिए पुरुष का अपूर्ण होना अनुपयुक्त है। शरीर का स्थूल होते चले जाना, अथवा लम्बा अति लम्बा होते जाने से मनुष्य की पूर्णता में वृद्धि नहीं, अपितु शक्ति के ह्रास से उसका उठना बैठना तक अशक्य होता है। घाव-सूजन-पीड़ा की बात तो दूर यदि नाखून काटते समय अंगुली को चट (अंश) रह जाये, अथवा भोजन के बाद दाँतों में सूक्ष्म कण फंसा रह जाये, तो मनुष्य सामान्य नहीं, विचलित ही रहता है, जब तक वह निकल नहीं जाता, कार्य में उसका मन नहीं लगता। हाथ पैर में कहीं भी नन्हीं फांस लग जाती है, उसे निकाल कर ही मनुष्य एकाग्रचित होता है, अन्यथा वह उलझन में ही फंसा रहता है। मनुष्य के कल्पित शतायु जीवन में ब्रह्मचर्य आश्रम शिक्षा दीक्षा के लिये, वानप्रस्थ आश्रम-उपासना-सेवा के लिए तथा संन्यास आश्रम लोक-परलोक के संतुलन द्वारा परमेश प्रभु के सर्वथा समर्पण के लिए मान्य हैं। बचता है गृहस्थ आश्रम जो **'योगः कर्मसु कौशलम्'** (गीता-२.५०) की भावना के अनुसार निरन्तर कर्मशील बने रहने के लिए होता है। इस हेतु उसे पूर्ण ही नहीं सम्पूर्ण बनाना पड़ता है।

गृहस्थ वही है जो होम में रमण करता है। यह शब्द इतना व्यापक हुआ कि अंग्रेजों में भी होम का अर्थ घर ही हो गया, अर्थात् जहाँ होम या हवन होता है। आचार्य चाणक्य ने तो यहाँ तक कह दिया है कि जहाँ स्वाहा-स्वधा की ध्वनि का गर्जन नहीं होता है वह घर श्मशान के समान है। यत्र-तत्र पूर्णाहुति से पूर्व एक मन्त्र बोलते हैं। यथा-

**पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरापत।**
**वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्जꣳ शतक्रतो॥** - यजु. ३/४६

अर्थात् हम प्रकृति पुरुष के साथ एक अद्भुत व्यापार करते हैं, चमस पूर्ण जो आहुति हम अर्पित करते हैं वह उत्तम अन्नादि पदार्थ तथा पराक्रमशील ऊर्जायुक्त वस्तुओं से सुपूर्ण होकर हमें प्राप्त होती है। अभी तक ब्रह्मचारी विद्यार्थी अकेला था। उसने अपने मस्तिक में विद्या को पूर्ण करने का श्रम किया, अब धर्मपत्नी का साथ पाकर वह संसार में व्यवहार के द्वारा सुपूर्ण कर सकेगा। धर्मपत्नी-पति की अर्द्धांगिनी बनकर उसे पूर्णांगी ही नहीं सुपूर्णांगी बनायेगी। वैवाहिक प्रक्रिया की वैधानिक पूर्णता की उद्घोषक घोषणा कहती है। देखिये इसका प्रतिदर्श:-

वर, वधू के दाहिने कन्धे पर अपना दाहिना हाथ रखकर

एकजुट हो जाता है और अपने व्रत संकल्प के अनुकूल पग धरने की सम्मति प्रदान करता है। पहला पग अन्न आधार के

लिए, दूसरा अन्न ग्रहण से ऊर्जा (बल) के लिए, तीसरा पग सामर्थ्य से समृद्धि के लिए, चौथा समृद्धि से सुख-आरोग्य के लिए, पाँचवा योग्य सन्तान के लिए, छठा ऋतुओं की भाँति जीवन के सामंजस्य के लिए उठाने के बाद दोनों का सातवाँ पग सखाभाव के लिए उठाया जाता है। सखा अर्थात् समान ख्याति के लिए। पति की ख्याति से पत्नी की, और पत्नी की ख्याति से पति की प्रतिष्ठा स्थापित होती है। पत्नी-पति की अर्द्धांगिनी बनती है। यह नहीं कि वह उसका आधा अंग बनती है। अर्थात् जहाँ पति का हृदय होता है, वहीं वह उसकी सहवासिनी बनती है। विवाह संस्कार की पूर्व प्रक्रियाओं में हृदय स्पर्श का संकेत- **'ओं मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु'** के द्वारा किया ही जा चुका होता है। एक दृष्टान्त द्रष्टव्य है। वयोवृद्ध दादा ने अपने पोते को पत्नी के साथ ऊँची आवाज में बहस करते हुए देखा। दादा ने पोते से पूछा, तुम अपनी पत्नी से गुस्से में इतनी ऊँची आवाज में क्यों बात करते हो? पोता बोला मैं धैर्य खो बैठता हूँ, मुझसे सहन नहीं होता, इस कारण मेरी आवाज ऊँची हो जाती है। दादा- 'पर तुम्हारी पत्नी तो तुम्हारे बिल्कुल पास खड़ी है। यही बात यदि तुम धीरे से कहोगे, तो भी उसे सुनाई दे जावेगी।' 'क्योंकि तेज बोलने पर आवाज सुनी और समझी जाती है। इससे मेरे भीतर का क्रोध भी बाहर हो जाता है।' दादा ने कहा 'कारण यह नहीं है बेटा! सच यह है कि उस क्षण तुम पत्नी के हृदय से दूर होते हो। भले ही पास खड़े हो, पर तुम्हें लगता है कि तुम उससे दूर हो। जब दोनों प्रेम में होते हैं तो दोनों दिल एक दूसरे के सन्निकट एकाकार होते हैं, उस समय धीरे से फुसफुसाने पर भी एक दूसरे की बात समझ में आ जाती है, और इस समय मौन भी विचारों को एक दूसरे तक सम्प्रेषित कर देता है।'

इस परिप्रेक्ष्य में महात्मा गाँधी की अवधारणा प्रेरणास्पद है- स्त्री को अर्द्धांगिनी माना गया है। जब तक कानून से स्त्री पुरुष के हक समान नहीं माने जाते, तब तक समझना चाहिए कि हिन्दुस्तान लकवे से ग्रस्त है। स्त्री की अवगणना अहिंसा की विरोधी है। इसलिए ग्राम सेवक को चाहिए कि वह हर स्त्री को माँ, बहन या बेटी के समान समझे और उसके प्रति आदरभाव रखे। (दै. हिन्दुस्तान २.१०.२०१६) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने महिलाओं को शक्ति केन्द्र बताते हुए कहा कि 'महिलाओं के उत्थान का पथ बताने वाले पुरुष नहीं हो सकते हैं, बल्कि महिलाएँ जरूर पुरुष के उत्थान में सहायक हो सकती हैं। उन्होंने कहा कि शादीशुदा महिलायें ज्यादा खुश रहती हैं। प्रबोधन केन्द्र द्वारा तैयार भारत में महिलाओं की स्थिति-विषय पर तैयार आख्या जारी करते हुये भागवत ने कहा कि महिलाओं में सृजन, पालन और विध्वंस की ताकत है।' (दै. हिन्दुस्तान २५.०६.२०१६) महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश समु. ४ में मनुस्मृति ३/५६-५७ के निम्न श्लोकों को उद्धृत करते हुये इनकी ही संस्तुति की है। यथा-

**यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।**
**यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।**
**शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।**
**न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा।।**

'जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है, उसमें विद्यायुक्त पुरुष होके देव संज्ञा धरा के आनन्द से क्रीड़ा करते हैं और जिस घर में स्त्रियों का सत्कार नहीं होता, वहाँ सब क्रिया निष्फल हो जाती हैं। जिस घर वा कुल में स्त्री लोग शोकातुर होकर दुःख पाती हैं, वह कुल शीघ्र नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है और जिस घर वा कुल में स्त्री लोग आनन्द से, उत्साह और प्रसन्नता से भरी हुई रहती हैं, वह कुल सर्वदा बढ़ता रहता है।' उपसंहार पर आते हुये संकोच पूर्वक अर्धांगिनी द्वारा स्वयं को सुपूर्णांगी बनाये जाने की शुभ घड़ी का संकेत करता हूँ। पूर्वांचल आर्य महासम्मेलन १९६० में गोरखपुर के अति विस्तृत मैदान में आयोजित हुआ। वहाँ एक छोटे कक्ष के समतुल्य वृहद् यज्ञ कुण्ड बनाया गया। चारों और चौकियों के आसन थे। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य अखिलेश्वर, सासनी (हाथरस) से बहिन कमला जी, कन्यायें तथा सैकड़ों स्त्री-पुरुष परिसर में बैठे व खड़े थे, किन्तु यज्ञ आरम्भ नहीं हो रहा था। सभी की निगाहें बनाये गये अनेक द्वार व मुख्य प्रवेश द्वार पर लगी थीं। बिना किसी दायित्व, मात्र दर्शक के रूप में जैसे ही हमने मुख्य द्वार पर प्रवेश किया कि भीड़ में हर्ष की लहर दौड़ गई थी, क्योंकि हम एकाकी नहीं अपनी अर्धांगिनी धर्मपत्नी के साथ थे, पहुँचते ही मुख्य यजमान दम्पती के पद को प्राप्त कर यज्ञायोजन की सभी प्रक्रियाओं को पूर्ण करने के साथ-साथ यज्ञ देव के आशीर्वाद संवरण का सौभाग्य भी मिल गया।

-देव नारायण भारद्वाज
अलीगढ़ (उ.प्र.)

# बलि प्रथा-अधर्म का प्रतीक

देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बलि का प्रयोग किया जाता रहा है। बलि प्रथा के अन्तर्गत बकरा, मुर्गा या भैंसे की बलि दिए जाने का प्रचलन है। हिन्दू धर्म में खासकर माँ काली और काल भैरव को बलि चढ़ाई जाती है। उन्हें बलि चढ़ाने के लिए कई तरह के तर्क दिये जाते हैं। सवाल यह उठता है कि क्या बलि प्रथा हिन्दू धर्म का हिस्सा है? यदि वेद और पुराणों की मानें तो नहीं और यदि अन्य धर्मशास्त्रों की मानें तो हाँ। 'हालांकि वेद, उपनिषद् और गीता ही एकमात्र धर्मशास्त्र हैं। पुराण या अन्य शास्त्र नहीं। यदि वेद, उपनिषद् और गीता इसकी इजाजत नहीं देती तो फिर यह प्रथा क्यों?'

**मा नो गोषु मा नो अश्वेसु रीरिषः।** – ऋग्वेद १/११४/८

**अर्थ–** हमारी गायों और घोड़ों को मत मार।

विद्वान् मानते हैं कि हिन्दू धर्म में लोक परम्परा की धाराएँ भी जुड़ती गईं और उन्हें हिन्दू धर्म का हिस्सा माना जाने लगा। जैसे वट वृक्ष से असंख्य लताएँ लिपटकर अपना अस्तित्व बना लेती हैं लेकिन वे लताएँ वृक्ष नहीं होतीं उसी तरह वैदिक आर्य धर्म की छत्रछाया में अन्य परम्पराओं ने भी जड़ फैला लीं। इन्हें कभी रोकने की कोशिश नहीं की गई। बलि प्रथा का प्रचलन हिन्दुओं के शाक्त और तांत्रिकों के सम्प्रदाय में ही देखने को मिलता है लेकिन इसका कोई धार्मिक आधार नहीं है। शाक्त या तांत्रिक सम्प्रदाय अपनी शुरुआत से ऐसे नहीं थे लेकिन लोगों ने अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए कई तरह के विश्वास को उक्त सम्प्रदाय में जोड़ दिया। बहुत से समाजों में लड़के के जन्म होने या उसकी मान उतारने के नाम पर बलि दी जाती है तो कुछ समाजों में विवाह आदि समारोह में बलि दी जाती है जो कि अनुचित मानी गई है। 'वेदों में धर्म के नाम पर किसी भी प्रकार की बलि प्रथा कि अनुमति नहीं दी गई है।' यदि आप मांसाहारी हैं तो आप मांस खा सकते हैं लेकिन धर्म की आड़ में नहीं। [वस्तुतः मांसाहार अधर्म ही है।]

**इममूर्णायुं वरुणस्य नाभिं त्वचं पशूनां द्विपदां चतुष्पदाम्।**
**त्वष्टुः प्रजानां प्रथमं जानित्रमग्ने मा हिंसी परमे व्योमन्॥**

**अर्थ–** उन जैसे बालों वाले बकरी, ऊँट आदि चौपायों और पक्षियों आदि दो पगों वालों को मत मार॥ (यजु. १३/५०)

पशुबलि की यह प्रथा कब और कैसे प्रारम्भ हुई, कहना कठिन है। कुछ लोग तर्क देते हैं कि वैदिक काल में यज्ञ में पशुओं की बलि दी जाती थी। ऐसा तर्क देने वाले लोग वैदिक शब्दों का गलत अर्थ निकालने वाले हैं। वेदों में पाँच प्रकार के यज्ञों (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, वैश्वदेवयज्ञ और अतिथि यज्ञ) का वर्णन मिलता है। 'पशु बलि प्रथा के सम्बन्ध में पंडित श्रीराम शर्मा की शोधपरक किताब '(पशुबलि-हिन्दू धर्म और मानव सभ्यता पर एक कलंक) पढ़ना चाहिए।'

**न कि देवा इनीमसि न क्या योपयामसि।**
**मन्त्र श्रुत्यं चरामसि॥** – सामवेद १७६

**अर्थ–** देवों! हम हिंसा नहीं करते और न ही ऐसा अनुष्ठान करते हैं, वेद मंत्र के आदेशानुसार आचरण करते हैं।

'वेदों में ऐसे सैकड़ों मंत्र और ऋचाएँ हैं जिससे यह सिद्ध किया जा सकता है कि हिन्दू धर्म में बलि प्रथा-निषेध है' और यह प्रथा हिन्दू धर्म का हिस्सा नहीं है। 'जो बलि प्रथा का समर्थन करता है वह धर्मविरुद्ध असुर और दानवी आचरण करता है।'

'कटु सत्य यह है कि मनुष्य ने अपनी वासनाओं (मांसाहार, मदिरापान, आदि) की पूर्ति करने व उसे जायज ठहराने के लिये देवी-देवताओं का सहारा लिया। जिसे शराब पीनी थी उसने देवी को शराब का भोग चढ़ाया। जिसे मांसाहार करना था उसने मांस का भोग लगाया, जिसे खीर-पूड़ी खानी थी, उसने खीर-पूड़ी का भोग लगाया। अब ये सब देवी का प्रसाद होने से ग्राह्य हो गये। जबकि देवी को इन सब से (मांस, मदिरा, खीर-पूड़ी) से कोई लेना देना नहीं है'।

– नरेन्द्र योगाचार्य
६१, जे. पी. नगर, सेक्टर-८, हिरणमगरी
उदयपुर- ३१३००२ (राज.)
चलभाष- ८४२६९३४८१४

# मानव मात्र के लिए स्वामी दयानन्द जी की आदर्श शिक्षाएं

इस आर्यावर्त्त देश में समय-समय पर ऋषियों का, योगियों का, त्यागी, तपस्वी, महान् पुरुषों का अवतरण होता रहा है। जैसे- सतयुग में सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र जी हुए, त्रेतायुग में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी, द्वापर में योगीराज श्रीकृष्ण जी का जीवन अनुकरणीय रहा, कलियुग में वेदों के विद्वान्, धर्मशास्त्रों के ज्ञाता, तर्क शिरोमणि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की आदर्श शिक्षाएँ, प्रेरणाप्रद विचार, उनका आदर्श जीवन, त्याग, तप मानवमात्र के लिए अनुकरणीय रहा है। उनके कल्याणकारी आदर्शों पर, शिक्षाओं पर चलने से ही मानव मात्र का कल्याण सम्भव है।

### १. सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने की शिक्षा

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी बड़े ही ज्ञानी पुरुष थे। उन्होंने पूरे अनुभव से, वेद-शास्त्रों के प्रमाण देकर एक शोध ग्रन्थ, ज्ञान का भण्डार, अनेक शिक्षाओं से परिपूर्ण क्रान्तिकारी ग्रन्थ का प्रकाश किया, जिसको पढ़कर, स्वाध्याय करके, न जाने कितने सपूतों ने अपने जीवन का कायाकल्प किया है। जीवन जीने के वास्तविक उद्देश्य को जाना। उदाहरणार्थ- स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा हंसराज जी, स्वामी दर्शनानन्द जी, पं. लेखराम जी, गुरुदत्त विद्यार्थी, पंडित अखिलानन्द जी, स्वामी सत्यानन्द जी, श्याम जी कृष्ण वर्मा, ब्रह्मचारी रामप्रसाद 'बिस्मिल' आदि-आदि अनेकानेक भारत-माता के वीर सपूतों ने 'सत्यार्थप्रकाश' को पढ़ा और उसके बाद जीवन जीने का लक्ष्य प्राप्त किया।

यह ग्रन्थ १४ चौदह समुल्लासों अर्थात् चौदह विभागों में रचा गया है।

### सत्यार्थ प्रकाश का प्रयोजन

महर्षि दयानन्द इसे स्वयं व्यक्त करते हुए लिखते हैं- 'मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है। अर्थात् जो सत्य है, उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। ........... इसीलिए विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।'

### २. ईश्वर के 'ओ३म्' नाम का ध्यान करने की शिक्षा

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से पूर्व देश में लोग वेद के सच्चे मार्ग को भूल चुके थे। बहुदेवतावाद का प्रचलन था। ईश्वर के स्थान पर लोग प्रकृति की, तुलसी, पीपल जैसे वृक्षों की पूजा करने लगे थे। कोई काली देवी, कोई दुर्गा, कोई लक्ष्मी, कोई गणेश, कोई शिवलिंग, कोई चतुर्भुजधारी विष्णु, कोई सर्पधारी शिव की मूर्तियाँ बनाकर, गण्डे, ताबीज, तिलक मालाएँ पहनकर, झांज-मजीरा-बाजा बजा-बजाकर नाचकूद उछल-उछल कर पूजा करने लगे। इस प्रकार वेद विरुद्ध परिपाटी जन्म ले चुकी थी। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हमें वेदों का, शास्त्रों का व उपनिषदों का प्रमाण देकर ईश्वर के सर्वरक्षक, सृष्टिकर्त्ता 'ओ३म्' नाम का ध्यान करने की शिक्षा प्रदान की।

'एको ब्रह्म द्वितीयो न अस्ति' ईश्वर जो 'ब्रह्म' रूप है। सबसे

बड़ा है। सबसे महान् है वह एक ही है। वह दो, तीन या उससे अधिक नहीं है **'ओं खम्ब्रह्म'** (यजु. अ.४०, मंत्र १७)

अर्थात् उस आकाश के समान व्यापक परमेश्वर का मुख्य और निज नाम 'ओ३म्' है। हमें उसी एक परब्रह्म परमेश्वर रूपी 'ओ३म्' का ही ध्यान करना चाहिए।

सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के सौ नामों की व्याख्या की गई है जैसे- सबसे बड़ा होने से ईश्वर का नाम 'ब्रह्म', जो बहुत प्रकार से जगत् को प्रकाशित करे इससे ईश्वर का नाम 'विराट्', जो ज्ञानस्वरूप, सर्वज्ञ, जानने, प्राप्त होने और पूजा करने योग्य है, इससे उस परमेश्वर का नाम 'अग्नि' है। जो शिष्ट, मुमुक्षु, मुक्त और धर्मात्माओं से ग्रहण किया जाता है, जो सबसे श्रेष्ठ है इसलिए उसका नाम 'वरुण' है। जो अखिल ऐश्वर्ययुक्त है, इससे उस परमात्मा का नाम 'इन्द्र' है। चर और अचर रूप जगत् में व्यापक होने से परमात्मा का नाम 'विष्णु' है। जो सबका रक्षक जैसा पिता अपने सन्तानों पर सदा कृपालु होकर, उनकी उन्नति चाहता है इससे उसका नाम 'पिता' है। जैसे पूर्ण कृपायुक्त जननी अपनी सन्तानों का सुख और उन्नति चाहती है वैसे परमेश्वर भी सब जीवों की बढ़ती चाहता है इससे परमेश्वर का नाम 'माता' है। जो प्रकृति आदि जड़ और सब जीव प्रख्यात पदार्थों का स्वामी वा पालन करने हारा है, इससे उस ईश्वर का नाम 'गणेश' वा 'गणपति' है। जो समग्र ऐश्वर्य से युक्त वा भजने योग्य है इसीलिए उस ईश्वर का नाम 'भगवान्' है। जो कल्याणस्वरूप और कल्याण का करनेहारा है इसीलिए उस परमेश्वर का नाम 'शिव' है। ये उपरोक्त सभी नाम परमेश्वर के ही हैं परन्तु इनसे भिन्न परमात्मा के असंख्य नाम हैं क्योंकि जैसे परमेश्वर के अनन्त गुण-कर्म-स्वभाव हैं वैसे उसके अनन्त नाम हैं। ये सभी नाम 'ओ३म्' के ही विशेषण हैं। इसीलिए परमेश्वर के इस छोटे से 'ओ३म्' नाम का ही ध्यान, मनन एवं चिन्तन करना चाहिए। इससे जीवन में सुख-शान्ति और आनन्द की वृद्धि होगी। समस्याओं का सफल निदान होगा। किसी कवि का यह कथन कितना सार्थक है कि-

**ओ३म् का सुमरन बड़ा, इससे बड़ा न कोय।**
**जो ओ३म् का सुमरन करे, तो दुःख काहे को होय।।**
**स्वाँस-स्वाँस पर ओ३म् भज वृथा स्वाँस मत खोय।**
**ना जाने इस स्वाँस का, आवन होय न होय।।**

**अन्धविश्वासों से बचने की शिक्षा-**

स्वामी दयानन्द जी का जन्म जिस युग में हुआ, उस युग में चारों ओर देश में, समाज में तथा परिवारों में अविद्या, अन्धविश्वासों का अज्ञानान्धकार फैला हुआ था। उदाहरण के रूप में-

१. व्यक्ति अपने काम पर जा रहा होता, बिल्ली रास्ता काट जाती, व्यक्ति डर जाता था, अब काम नहीं बनेगा।

२. किसी को उसी समय छींक आ जाती, चाहे वह छींक जुखाम, नजला या बीमारी की अवस्था में ही आयी हो।

३. कोई एकाक्षी (काणा) व्यक्ति सामने आ जाता, उसे भी अपशकुन मान लिया जाता था।

४. कोई गरीब व्यक्ति, जो आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा होता था, या सफाई कर्मचारी, जन्मजात अपने को ब्राह्मण मानने वाले व्यक्ति से छू जाता था, तो अनर्थ हो जाता था।

५. इसी प्रकार उस समय स्त्रियों को पढ़ाना, अच्छा नहीं माना जाता था, नारी घर की चार दिवारी में पर्दे में कैद थीं। गाँव, देहात, मुसलमान परिवारों में आज भी कन्यायें शिक्षा ग्रहण नहीं कर पा रही हैं। इसके अतिरिक्त बाल-विवाह, अनमेल-विवाह, सती प्रथा, विधवा-विवाह तथा बलि-प्रथा जैसी कुरीतियों, कुप्रथाओं, कुत्सित रीति-रिवाजों के उन्मूलन के लिए स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना की और एक समाज सुधारक ग्रन्थ 'सत्यार्थ-प्रकाश' की रचना की। आर्य समाज के विद्वानों ने साहित्य लिखा। गुरुकुलों की स्थापना की। छुआछूत, भूत-प्रेत, फलित-ज्योतिष, तिलक, मालाओं का धारण करना, तान्त्रिकों के भ्रम जाल में फँसना इत्यादि बातों के बहकावे में न आना, जिनसे सन्तानें, बच्चे, बड़े-बूढ़े किसी धूर्त के माया-जाल में न फंस सकें, ऐसी शिक्षा का उपदेश किया।

**माता-पिता एवं आचार्य की शिक्षा-**

शास्त्रों में बच्चों के तीन उत्तम शिक्षक माने गये हैं अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य। महर्षि याज्ञवल्क्य का वचन है-

**'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद'** - शतपथ ब्राह्मण

अर्थात् इन्हीं तीनों की उत्तम शिक्षा से मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान्! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों। माता-पिता को अति उचित है कि वे शुद्ध शाकाहारी भोजन पर अधिक ध्यान दें। मद्य, नशीले पदार्थों, बुद्धि नाशक, रूक्ष पदार्थों का परित्याग कर, जो शान्ति, आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता को बढ़ाने वाले पदार्थ हैं जैसे- दूध, घृत, शहद, फल, सब्जी तथा उत्तमोत्तम अन्नपान की शिक्षा दें।

किसी ने ठीक ही कहा है कि-

'जैसा खाये अन्न वैसा बने मन,
जैसा पिये पानी वैसी बने वाणी।'

**माता की शिक्षा–** बच्चे की पहली गुरु 'माता' को माना गया है। **'माता निर्माता भवति'** माता बच्चे को लोरियाँ सुना-सुना कर संस्कार देती है। बच्चे का निर्माण करती है। बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करे जिससे सन्तान सभ्य हों और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावें। छोटे-बड़े, मान्य, पिता, माता, गुरु, आचार्य आदि के साथ शिष्टाचार का व्यावहारिक ज्ञान, बातचीत करने का तरीका, उनके पास उठने-बैठने आदि की भी शिक्षा दिया करें जिससे कहीं उनका अयोग्य व्यवहार न हो सके बल्कि सर्वत्र प्रतिष्ठा हो। सन्तान किसी धूर्त, ढ़ोंगी, बहरूपिया के बहकावे में न आवें। जिससे फलित ज्योतिष, भूत-प्रेत आदि मिथ्या बातों का विश्वास न हो।

इसी प्रकार पिता शिक्षा करे कि हमारी सन्तानें चोरी, आलस्य, प्रमाद, नशीले मादक द्रव्य, मिथ्या भाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या द्वेष, मोह आदि दोषों को छोड़ने के लिए तैयार रहें। छल-कपट, धोखा देना, अभिमान करना, कृतघ्नता से अपना हृदय दुःखी होता है, दूसरों का तो कहना ही क्या। क्रोधादि दोष छोड़ और कटु-वचन को त्यागकर, शान्त और मधुर वचन ही बोलें। बड़ों का सम्मान करें, उन्हें ऊँचा आसन दें, विनम्रता से 'नमस्ते' करें।

**'यान्यस्माकꣳ सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि'**

यह तैत्तिरीयोपनिषद् का वचन है। माता, पिता और आचार्य अपनी सन्तान और शिष्यों को सदा यह उपदेश करें कि जो जो हमारे धर्मयुक्त कर्म हैं उन-उन का ग्रहण करें और यदि

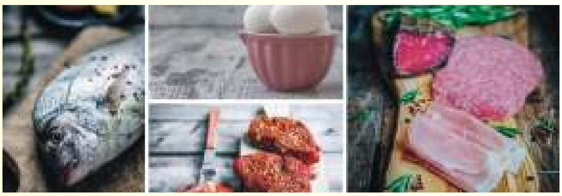

हमारे जीवन में भी कोई दुर्गुण, दुर्व्यसन, दुर्व्यवहार आदि दोष, कमजोरी हैं उनका त्याग करें। सज्जनों का संग और दुष्टों का त्याग करें। विधि पूर्वक ईश्वर की उपासना, प्रार्थना करें। मद्य, शराब, अण्डा, मांस आदि के सेवन से अलग रहें। जिस प्रकार आरोग्य, विद्या और बल प्राप्त हो उसी प्रकार के शुद्ध शाकाहारी भोजन करें।

'इस प्रकार सन्तानों को उत्तम शिक्षा, विद्या, गुण, कर्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है।' काश! आज के माता-पिता और शिक्षक अपनी नई पीढ़ी को सही दिशा-बोध देने में अहम भूमिका निभाते।

### आज के युग में महर्षि दयानन्द जी की शिक्षा की और अधिक आवश्यकता है–

कहने की और अधिक आवश्यकता नहीं, सारी उन्नतियों का केन्द्र ऋषि-महर्षियों की वैदिक शिक्षा है। आज की युवा पीढ़ी, नवयुवक और नवयुवतियाँ दिशा भ्रमित हैं। उनके दिशाहीन आदर्श टी.वी. चैनल या फिल्मों के नायक एवं नायिकायें हैं, जिनके द्वारा लगातार अश्लीलता, चरित्र हीनता, मॉडल के नाम पर अर्द्धनग्नता, पॉप डान्स आदि की अपसंस्कृति फैलाई जा रही है। जिससे नैतिक मूल्यों का पतन हुआ है। आज के इस अत्यन्त भौतिक युग में महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणाप्रद आदर्श शिक्षाओं की और अधिक आवश्यकता है जिसका एक संक्षिप्त सा उदाहरण लेख के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

– ए-९४ विकास नगर, फेस-३, नई दिल्ली-११००५९
चलभाष- ९२५०९०६२०१

### विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

स्वामी जी की कर्मभूमि पर आकर बहुत अच्छा लगा, चित्र के माध्यम से जिस प्रकार उनके जीवन दर्शन को दर्शाया गया है उससे समझने में आसानी होती है, बहुत अच्छा लगा। विज्ञान को नई ऊँचाईयों तक पहुँचाने में हमारे वेद का महत्वपूर्ण मागदर्शन मिला, आगे भी भारतीय विज्ञान अपने चरम पर पहुँचेगा और उसकी इस उपलब्धि का आधार हमारे वेद ही होंगे। अच्छा स्थान, शानदार वातावरण, अच्छे लोग, अच्छा व्यवहार देखकर अच्छा लगा, पुनः मौका मिलेगा तो फिर से आयेंगे। धन्यवाद – वैद्य अक्षय चौहान, नोएडा

संस्था अपने आप में बहुत ही अभूतपूर्व है। सब सही ढंग से सही दिशा में जा रहे हैं। परमात्मा की कृपा हमेशा बनी रहे और अशोक जी के मन में इस संस्था का जो वैदिक विचार है (Further Projects) यह पूर्ण हो। पूरे भारत में अगर वैदिक विचार का सही ढंग से सम्प्रेषण किया जा रहा है तो वह है उदयपुर का श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, उदयपुर। हम चाहते हैं कि सभी संस्थाओं, सभी आर्य समाजों, सभी प्रतिनिधि सभाओं को इस ओर ध्यान दे उदयपुर को ज्यादा से ज्यादा सहायता करनी चाहिए। ध्यान देकर इसे विश्व स्तर पटल पर लाना चाहिए। – डी. मोहन वक्तावर, हॉलैण्ड

# राष्ट्र गौरव महाराज सुहेल देव

कथा सरित

स्वदेश की स्वतंत्रता, सम्प्रभुता और सम्मान की रक्षा के लिए अपने विवेक और अप्रतिम शौर्य का प्रदर्शन करने वाले व्यक्ति थे श्रावस्ती नरेश सुहेलदेव।

भारतीय इतिहास के कीर्ति-पुरुष महाराज सुहेलदेव राजभर क्षत्रियवंश के शासक महाराजा बिहारीमल तथा चन्देलवंशीय वीर क्षत्राणी जयलक्ष्मी देवी के पुत्र थे। उनका जन्म विक्रमी १०६५ (सन् १००६) की बसन्त पंचमी को हुआ था। सुहेलदेव के अलौकिक गुणों, शौर्य और प्रतिभा से प्रसन्न होकर इनके पिता बिहारीमल ने १८ वर्ष की अवस्था में इनका राज्याभिषेक कर दिया था। अपने बुद्धि चातुर्य, संगठन-कौशल और अद्भुत पराक्रम से सुहेलदेव ने राज्य का विस्तार उत्तर में नेपाल से लेकर दक्षिण में कौशाम्बी तक तथा पूर्व में वैशाली से लेकर पश्चिम में गढ़वाल तक कर लिया था। इनके शासन में प्रजा सुख-शान्ति और धन-धान्य से सम्पन्न थी।

**महमूद का हमला–** उस समय भारत की पश्चिमोत्तर सीमा से इस्लामी आक्रमणकारियों के आक्रमण प्रारम्भ हो गए थे। वे भारत की अकूत धन-सम्पदा को लूटने तथा इस्लाम के प्रचार प्रसार के उद्देश्य से बार-बार आक्रमण कर रहे थे। इसी कुटिल मंशा से महमूद गजनवी के सिपहसालार सैयद साहू ने एक बड़ी सेना लेकर पूर्वोत्तर भारत को जीतने के लिए कूच किया। रास्ते में पड़ने वाले सभी राज्यों को लूटता हुआ वह अवध जा पहुँचा। यहाँ उसने उस समय के भारत के समृद्ध नगर सतरिख पर आक्रमण कर उसे जीत लिया। भयंकर लूटपाट के साथ ही उसने प्रसिद्ध शिव पंचायतन मंदिर को भी ध्वस्त कर दिया। सतरिख में अपना सैन्य शिविर स्थापित कर उसने आसपास के राज्यों को जीतने के लिए अपने सिपहसालारों को भेजा।

सैयद साहू के बेटे सैयद सालार मसूद ने, एक बड़ी सेना लेकर बहराइच के लिए प्रस्थान कर दिया। दूसरी ओर श्रावस्ती नरेश महाराज सुहेलदेव ने रुद्रावली (रुद्रोली) के राजा रुद्रधर के किले में क्षेत्र के राजाओं की एक गुप्त बैठक की। इस बैठक में २१ राजाओं ने शत्रु सेना का सामूहिक रूप से सामना करने का निर्णय लिया।

**सूअर खड़े कर दिए–** अपनी विशाल सेना लेकर पहुँचे सैयद सालार मसूद ने छल-कपट की नीति अपनाकर भूरायचा दुर्ग पर आक्रमण कर भूरायदेव को पराजित कर दिया जो महाराज सुहेलदेव के भाई थे। भूरायचा दुर्ग पर कब्जा कर उसने हजारों हिन्दुओं को मौत के घाट उतार दिया और भारत के प्रमुख सूर्य मन्दिरों में से एक बालार्क मन्दिर को क्षतिग्रस्त कर सूर्य कुण्ड की पवित्रता को नष्ट कर दिया।

इस दुःखद समाचार को सुनकर महाराजा सुहेलदेव का खून खौल उठा। उन्होंने बहराइच के नानापारा क्षेत्र में अपनी पूरी सैन्य-शक्ति के साथ चारों ओर से आक्रमणकारी सैयद सालार मसूद की सेना पर हमला बोल दिया। सुविचारित सुनियोजित रणनीति के तहत किए गए चौतरफा हमले से शत्रु सेना के पैर उखड़ने लगे, तो सालार मसूद ने अपने सैनिकों के आगे गायों के झुण्ड खड़े कर हिन्दू सैनिकों के मनोबल को क्षीण कर युद्ध जीतने की कोशिश की।

राजा सुहेलदेव ने ईंट का जवाब पत्थर से दिया। शत्रु सेना को तितर-बितर करने के लिए अपने पासी राजाओं और सैनिकों के सहयोग से उन्होंने वाराहों (सूअरों) के झुण्ड को हथियार बनाया। सूअरों की चिंघाड़ से गायें युद्धभूमि से भाग खड़ी हुई और शत्रु सैनिक भी उनके स्पर्श और प्रहार से बचने के लिए चारों ओर भाग खड़े हुए। भागती हुई शत्रु सेना को चारों ओर से घेरकर भारतीय सैनिकों ने मौत के घाट उतार दिया। सैयद सालार मसूद की सेना के हजारों सैनिक यमलोक भेज दिए गए।

**जिहाद की कमर तोड़ दी–**

सैयद सालार मसूद युद्धभूमि से भागकर अपने प्राण बचाने के लिए कुटिला नदी (वर्तमान टेढ़ी नदी) के पास जाकर एक गुफा में छिप गया। महाराज सुहेलदेव ने उसका पीछा नहीं छोड़ा और अन्ततः १४ जून १०३३ ई. रविवार को तलवार के एक प्रहार से उसे भी नर्क का रास्ता दिखा दिया। विदेशी लुटेरे सैयद सालार मसूद को उसकी सारी सेना सहित मार महाराज सुहेलदेव ने स्वदेश, स्वधर्म, स्वजाति, आत्म-सम्मान और भारतीय संस्कृति की विजय पताका विश्व मंच पर फहरा दी। भारतीय शौर्य की इस अद्भुत गाथा को सुनकर आतंकित विदेशी आक्रमणकारियों की आगामी १५० वर्षों तक भारत की ओर आँख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं पड़ी।

-साभार- वप्पा रावल

# स्वास्थ्य

## प्राकृतिक-घरेलू-आयुर्वेदिक योग उपचार

**हीमोग्लोबिन (Hemoglobin) :** हीमोग्लोबिन कम होने पर अनार का सेवन करें। इसका जूस पीने से हृदय मजबूत होगा।

**यूरिक एसिड (Uric Acid) :** रक्त में यूरिक एसिड के बढ़ने पर गिलोय (गुरूंची या अमृता) लता उपर्युक्त विधि से बनाकर नियमित सेवन करें। यूरिक एसिड में लाभ होता है।

**किडनी की समस्या (Kidney) :** वैद्यरत्नम् की आयुर्वेदिक औषधि 'पुनर्नवा कासा' भोजन के पहले एवं 'पूनर्नवा आसव' भोजन के बाद लेवें। गाय के दूध को दही से फाड़ कर छैने के पानी को प्रतिदिन पीयें। जौ की रोटी एवं कुत्थी की दाल का सेवन करें। किडनी रोग में लाभ होगा।

**भुट्टा का सूखा बाल :** दो कप जल में सूखे भुट्टे के बाल को मिलाकर उबालें। जब यह एक कप शेष रह जाये तो इस जल को प्रतिदिन नियमित ग्रहण करने से 'क्रियेटिनीन' कम हो जायेगा। सूजन में भी लाभ मिलता है। 'पुनर्नवा (जड़ी-बूटी) का उपयोग या अर्क-मकोय से 'क्रियेटिनीन' में भी लाभ होता है। इसे भोजन के बाद लेना चाहिए।

**विटामिन 'डी' की कमी :** तालमखाना खाने से शरीर में पौष्टिक तत्वों की पूर्ति होती है। इसके नियमित सेवन से विटामिन 'डी' की कमी को दूर किया जा सकता है।

**हल्दी :** रात्रि के समय दो कप दूध में आधे चम्मच हल्दी पाउडर को डालकर उबालें और सेवन करें। इससे पेट के गैस की समस्या का निदान होगा। टूटी हुई हड्डियों को जोड़ने में सहायक होती है। इसके प्रयोग से शरीर में होने वाले संक्रामक रोगों में फायदा होगा। अमेरिका में ४०० शोध पत्र 'अकेले हल्दी का कैन्सर पर प्रभाव' के लिए ही हुए हैं। प्रातः कच्ची हल्दी खाने से बहुत लाभ होता हैं।

**तिल का तेल :** खाद्य तेलों में सर्वश्रेष्ठ है। खिचड़ी, दाल, सब्जी आदि में प्रयोग करें। इससे घुटनों के दर्द, वायु जनित समस्याओं एवं बुढ़ापे में होने वाले रोगों का प्रतिरोध होता है। इसका प्रयोग च्यवनप्राश में होता है।

इसमें प्रचुर मात्रा में प्रोटीन पाया जाता है

**शहद :** जंगल का शुद्ध ४ चम्मच शहद प्रतिदिन प्रातः आधा गिलास ठण्डे जल में डालकर ग्रहण करने से वजन घटेगा, खून पतला होगा, हृदय मजबूत होगा, शरीर की रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति बढ़ेगी।

**गौ-मूत्र :** कैंसर के रोगी को देशी गाय का प्रातः का पहला गौ-मूत्र फायदा करता है। गौ-मूत्र के सेवन से हृदय का इजेक्शन फैक्टर बढ़ जाता है। प्रातः आधे कप गौ-मूत्र के साथ ३ चम्मच जंगल के शहद का सेवन करने से अनेक बीमारियों मे लाभ होता है।

**गन्ने का रस :** गन्ने का रस पाचन क्रिया में सहायक होता है। इससे शरीर को शक्ति मिलती है और पेशाब सम्बन्धी रोगों में भी लाभ होता है।

**नारियल पानी/डाभ :** कच्चे नारियल (डाभ) का पानी ग्रहण करने से पेट सम्बन्धी रोगों में काफी लाभ होता है एवं पाचन क्रिया सुचारू रूप से होती है। किडनी/पेशाब सम्बन्धी रोगों में भी लाभ होता है; पेशाब का प्रवाह बढ़ता है। डायबिटीज में लाभ होता है।

**सहजन-फली :** सहजन-फली का सब्जी के रूप में व्यवहार करें। यह वात-रोग का नाशक है जैसे जोड़ों का दर्द, घुटनों का दर्द आदि को दूर करता है। इसके पत्तों को कूटकर घुटनों या कमर पर लेप करने से भी दर्द दूर होता है और सूजन भी कम हो जाती है।

**तुलसी अमृत :** २५ पत्ता हरी तुलसी, २ चम्मच सिट्टा-मिश्री, २ नग कालीमिर्च एवं २ छोटा टुकड़ा अदरक (कालीमिर्च और अदरक को कूट लें।) सबको एक साथ २ गिलास पानी में २५ मिनिट उबालें। इसे छानकर नित्य सुबह उठते ही हल्का गर्म कर पीयें। इससे शरीर की रोग-निरोधक शक्ति बढ़ती है, सदा के लिए पेट-पाचन-गैस और सर्दी-खाँसी की शिकायत नहीं रहेगी। कलिकाल में निरोग रहने का यह अमृत समान नुस्खा है।

– योगाचार्य ओमप्रकाश मस्करा, अध्यक्ष
चारु इन्टरप्राइजेज, २८-बी शेक्सपीयर सरणी
१०-बी निलम्बर बिल्डिंग, १०वीं माला, कोलकाता- ७०००१७

# आर्य जगत् के समाचार

### बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ

न्यास के व्यवस्थापक एवं अभिन्न अंग श्री सुरेश पाटोदी जी ने जहां

अपने जीवन के ७५ वसंत पूरे किये वहीं अपने दाम्पत्य जीवन के ५० वर्ष भी सफलतापूर्वक पूर्ण किये। पाटोदी जी की तीनों संतानों (पुत्र-विकास,मनीष एवं पुत्री श्वेता) की ओर से इस हीरक व स्वर्णिम अवसर को एक सुरुचिपूर्ण समारोह में सभी परिवारी व आत्मीय जनों के साथ धूमधाम से मनाया गया। न्यास व सत्यार्थ सौरभ पत्रिका के सभी सदस्य इस अवसर पर श्री पाटोदी जी एवं उनकी सहधर्मिणी श्रीमती कनक पाटोदी को बहुत-बहुत बधाई देते हुए शुभकामनाएँ अर्पित करते हैं तथा परम कारुणिक प्रभु से दोनों के निरामय दीर्घायुष्य तथा सुखी पारिवारिक जीवन हेतु प्रार्थना करते हैं।

- भवानी दास आर्य, मंत्री-न्यास

### गुरुकुल का वार्षिक महोत्सव आयोजित

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, न्यास, गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली का ८६वां वार्षिक महोत्सव एवं ४०वां चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ १६ दिसम्बर २०१९ से ५ जनवरी २०२० तक अनेक भव्य कार्यक्रमों को अपने आप में संजोकर सम्पन्न हुआ। इसमें अनेक विद्वान्, भजनोपदेशक और गणमान्य आर्यजन उपस्थित हुए। पूर्णाहुति कार्यक्रम के पश्चात् भगवान भंडार आयोजित था।

- स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

### संस्कार शिविर २०१९

आर्य समाज, फतेहनगर द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय, फतेहनगर एवं दयानन्द एकेडमी, फतेहनगर के तत्वावधान में दिनांक १५ से १८ नवम्बर २०१९ तक त्रिदिवसीय आवासीय संस्कार शिविर आयोजित किया गया। जिसमें २०२० शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविराधिकारी डॉ. कविता शर्मा ने बताया कि बच्चों में स्वावलम्बन, अनुशासन, सेवा भावना, विनम्रता व सदाचार जैसे गुणों का विकास करने के लिए विद्यालय परिवार द्वारा संस्था के व्यवस्थापक श्रीमान् सुरेश जी मित्तल के निर्देशन में प्रतिवर्ष ऐसे शिविरों का आयोजन किया जाता है। शिविरान्तर्गत प्रातःकालीन सत्रों में जहाँ आर्य विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों पर बालक/बालिकाओं को सम्बोधित किया गया वहीं सायंकालीन सत्रों में शिविरार्थियों ने शहीद भगतसिंह, बेटी बचाओ, असि प्रदर्शन, व्यायाम प्रदर्शन, वृक्ष बचाओ आदि कार्यक्रमों की प्रस्तुतियों से सभी का मन मोह लिया। श्रीमान् सुरेश जी मित्तल ने मैजिक ट्रिक के विभिन्न प्रदर्शनों के माध्यम से बताया कि किस प्रकार बाबा लोग सामान्य सी हाथ की सफाई के बल पर लोगों को मूर्ख बनाते हैं। ऐसी हाथ की सफाई थोड़े से प्रयत्न से कोई भी सीख सकता है इसलिए इन तथाकथित साधुओं और अन्धविश्वासों से बचकर रहना ही श्रेयस्कर है।

- जीवनलाल आर्यवीर

### ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य, उदयपुर के निवास पर दिनांक २३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर २०१९ तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने ब्रह्मा पद के दायित्व का निर्वहन करते हुए जहाँ यज्ञ कार्य को विधिपूर्वक सम्पन्न कराया वहीं ऋग्वेद के कतिपय मन्त्रों की अत्यन्त मनोहारी व्याख्या प्रस्तुत कर उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। २६ दिसम्बर रविवार को पूर्णाहुति के सुअवसर पर २५० से अधिक आर्यजन उपस्थित थे। इस अवसर पर डॉ. प्रशान्त अग्रवाल व श्रीमती शुचिता अग्रवाल ने सुन्दर भजन 'इतनी शक्ति हमें देना दाता ......' प्रस्तुत किया। की-बोर्ड पर बिटिया स्तुति ने साथ दिया। श्री इन्द्रदेव जी पीयूष ने भी ईश महिमा के एक भजन की प्रस्तुति की। अन्त में सभी आगन्तुक सज्जनों का श्री अशोक जी आर्य द्वारा आभार प्रस्तुत किया गया, तत्पश्चात् सभी के लिए स्नेहभोज का आयोजन हुआ जिसका सभी ने आनन्द लिया।

- नवनीत आर्य

## संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर

# समाचार

### स्वाध्याय एवं साधना शिविर सम्पन्न

पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल, प्रतापनगर, चित्तौड़गढ़ में दिनांक २६ से ३० दिसम्बर २०१६ तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सौजन्य से पंचदिवसीय शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. सोमदेव जी शास्त्री; मुम्बई और आचार्य कर्मवीर जी; रोजड़ के निर्देशन में महर्षि दयानन्द कृत पंचमहायज्ञ विधि तथा सत्यार्थप्रकाश के नवम समुल्लास का स्वाध्याय कराया गया तथा अष्टांग योग के अनुसार साधना का भी अभ्यास करवाया गया। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री अमरसिंह जी; ब्यावर भी उपस्थित रहे। - डॉ. सीमा श्रीमाली, आचार्य

### डॉ. वेद प्रकाश जी का सम्मान

आर्य समाज, कोटा की ओर से कैंसर सोसायटी का अध्यक्ष बनने पर डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता का सम्मान किया गया। आर्य समाज के पूर्व जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि डॉ. गुप्ता को केसरिया साफा और शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। इस दौरान डॉ. गुप्ता ने कहा कि उन्होंने सदैव सेवा को लक्ष्य मानकर कार्य किया है। आगे भी इसी प्रकार से सेवाकार्य में संलग्न रहेंगे। इस दौरान राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान नरदेव आर्य, रावतभाटा आर्यसमाज के मंत्री ओमप्रकाश आर्य, पूर्व प्रधान योगेश आर्य समेत कई लोग उपस्थित रहे।

### दिशा पर्व सम्पन्न

गुरुकुल, हरिपुर, जुनानी का दशम् वार्षिकोत्सव (दिशा पर्व) दिनांक २८ से ३० दिसम्बर २०१६ में भव्य रूप से सम्पन्न हुआ। इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में देश की शीर्ष दिव्य विभूतियों ने उपस्थित होकर पर्व को गरिमा प्रदान की। चतुर्वेद पारायण यज्ञ के साथ साथ शताधिक नर-नारियों ने वानप्रस्थ, नैष्ठिक, वैदिक धर्म की दीक्षा ली और अनेक विशिष्ट लोगों को विभिन्न पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर दशांगुलम के नाम से स्मारिका का प्रकाशन भी किया गया।

### गुरुकुल हेतु सहयोग आमंत्रित

गुजरात के साबरकांठा जिले में रोजड़ ग्राम के निकट आर्ष (वैदिक) गुरुकुल का संचालन हो रहा है यह सभी को विदित है। इस गुरुकुल में विद्यार्थियों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता। अब छात्रों के बढ़ने के कारण गुरुकुल में कक्ष इत्यादि नवीन निर्माण की योजना बनाई गई है जिस पर सवा करोड़ रु. लागत आने की संभावना है। प्रबन्धक न्यासी आचार्य सत्यजित् जी का आर्य जगत् के सभी उदारमनाओं से उदार अर्थ सहयोग करने हेतु निवेदन है। - आचार्य सत्यजित्, दिलीप कुमार जिज्ञासु

### आध्यात्मिक योग शिविर

आध्यात्म व योग के प्राचीन मूल वैदिक स्वरूप से क्रियात्मक प्रायोगिक रूप से अवगत कराने हेतु वानप्रस्थ साधक आश्रम आर्यवन रोजड़ के शांत सुरम्य आश्रम में दिनांक ११ एवं १२ जनवरी २०२० को आध्यात्मिक योग शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसमें जीवन को आध्यात्मिक रूप से समझने का अवसर प्राप्त होगा। तनाव दबाव से हटकर शांति में अपने जीवन का अन्तरबोध विधि से निरीक्षण का अवसर भी प्राप्त होगा। शिविर शुल्क ५०० रु. रखा गया है।

सम्पर्क- ०९४-२७०-५९५५०

### राम कथा का दिव्य आयोजन

वैदिक संस्कृति प्रचार संघ, उदयपुर की ओर से संगीतमय दिव्य श्री राम कथा का आयोजन हरियाणा करनाल की वैदिक विदुषी सुश्री अंजलि जी आर्या की ओजस्वी वाणी में दिनांक ६,७ व ८ दिसम्बर १९ को दोपहर २ बजे से ५ बजे तक विद्या निकेतन उमावि, सेक्टर ४ उदयपुर में सकल आर्य समाज उदयपुर के तत्वावधान में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ । कथा में आर्य संस्कृति के आधार मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के वेद सम्मत व्यक्तित्व को मुख्य प्रसंगों के साथ प्रस्तुत करने में कथा वाचिका सफल रहीं । सभागार में बड़ी संख्या में उपस्थति जन समूह ने श्री राम के जीवन से प्रेरणा प्राप्त की ।

कथा के प्रथम दिन ६ दिसम्बर,१९ को श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने सत्र की अध्यक्षता की। सत्र के आरम्भ में विभिन्न विद्यालयों से आए विद्यार्थियों व शिक्षाविदों के लिए विशेष सत्र आयोजित हुआ। ७ दिसम्बर को उदयपुर ग्रामीण विधायक श्री फूल सिंह जी मीणा व ८ दिसम्बर को नेता प्रतिपक्ष

उदयपुर नगर विधायक श्री गुलाब चन्द कटारिया ने मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि महामंत्री, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी श्री जगदीश राज श्रीमाली व महामंत्री उदयपुर जिला कांग्रेस कमेटी श्री हरीश शर्मा रहे । आगंतुक अतिथिगण ने आज की युवा पीढ़ी के समक्ष श्रीराम के पावन जीवन को शुद्ध रूप में रखने के इस प्रयास की सराहना की। न्यास द्वारा वैदिक साहित्य विक्रय का आकर्षक स्टाल लगाया गया । सभागार को भगवान श्री राम के प्रेरक जीवन के मुख्य प्रसंगों की तस्वीरों से सुसज्जित किया गया । प्रो. डॉ. अमृत लाल जी तापड़िया के मार्गदर्शन में आयोजन की संयोजिका श्रीमती सरला गुप्ता, सह संयोजक डॉ. भूपेन्द्र शर्मा, सुरेश चन्द्र चौहान व आचार्य सत्यप्रिय जी आर्य द्वारा श्री राज कुमार गुप्ता, संजय शांडिल्य, मुकेश पाठक, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, श्रीमती ललिता मेहरा आदि सहित उत्साही आर्यजनों के सहयोग से इस सार्थक, प्रेरक व अनूठे प्रयास से वैदिक धर्म का संदेश आम जन में सफलतपूर्वक प्रस्तुत किया गया। आर्य समाज उदयपुर (पिछोली), हिरण मगरी व सज्जन नगर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम को सभी स्थानीय आर्य जन की तन, मन धन की आहुति से ऐतिहासिक सफलता प्राप्त हुई।

- डॉ. भूपेन्द्र शर्मा, सह संयोजक वैदिक संस्कृति प्रचार संघ, उदयपुर

## शोक संवेदना

### महाशोक

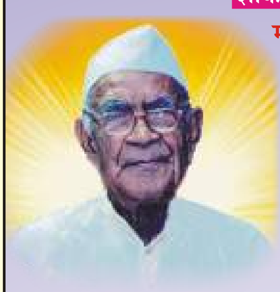

व्याकरण का सूर्य हुआ अस्त। आर्य जगत् के उद्‌भट विद्वान् आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश के निधन के अत्यन्त दुःखद समाचार से हम सब स्तब्ध हैं। आचार्य जी व्याकरण के प्रामाणिक विद्वान् थे। लेखन, सृजन व वक्तृत्व कला के धनी आचार्य जी ने सभी विधाओं के माध्यम से आर्यसमाज को जिस प्रकार समृद्ध किया, वह स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य है। न्यास में बरसों तक आयोजित वेद पारायण यज्ञों के आप ब्रह्मा तथा मुख्य वक्ता रहे। आपका निधन सम्पूर्ण आर्यजगत् की अपूरणीय क्षति है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें। न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

आर्य समाज नेमदारगंज के वयोवृद्ध सदस्य एवं पूर्व प्रधान श्री हरिप्रसाद जी आर्य का निधन ८७ वर्ष की आयु में दिनांक २०.११.१६ को हो गया। आर्य समाज नेमदारगंज के लिए उनकी सेवाएं स्वर्णिम रहीं। दिवंगत आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि।

– सत्यदेव प्रसाद आर्य मरुत

न्यास के पुरोहित और सत्यार्थ सौरभ पत्रिका के कम्पोजर श्री नवनीत आर्य के श्वसुर श्री विनय कुमार ठाकुर का ६१ वर्ष की आयु में दिनांक ६ दिसम्बर २०१६ को निधन हो गया। वे गत कुछ समय से बीमार थे और दिल्ली के प्रसिद्ध अस्पतालों में उनका उपचार चल रहा था। न्यास और सत्यार्थ सौरभ पत्रिका के सभी सदस्य चौधरी परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं और परमपिता परमात्मा से विनय करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनंदमयी गोद में स्थान प्रदान करें।

– अशोक आर्य

आर्य जगत् के निकट अत्यन्त दुखद एवं खेद का विषय है कि सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री बृजपाल कर्मठ का निधन हो गया है. उनका निधन आर्यसमाज की महती व अपूरणीय क्षति है। श्री कर्मठ ने अपना सारा जीवन आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में खपा दिया। वे न्यास द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित 'सत्यार्थ प्रकाश महोत्सवों में अपनी सेवायें देते रहे। न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनंदमयी गोद में स्थान प्रदान करें।

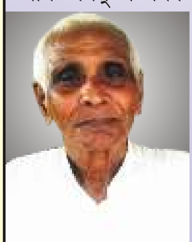

– डॉ. अमृतलाल तापड़िया, संयुक्त मंत्री–न्यास

### पुरस्कारों हेतु आवेदन आमंत्रित

सर्वविदित है कि आर्य समाज सान्ताक्रूज, मुम्बई द्वारा प्रतिवर्ष लगभग १५ पुरस्कारों द्वारा आर्य समाज के क्षेत्र में कार्य कर रहे वैदिक विद्वानों, महिलाओं एवं कार्यकर्ताओं को पुरस्कृत किया जाता है। पुरस्कारों के नाम वेद वेदांग पुरस्कार (वेद वेदांगों पर अनुसंधान करने वाले को), वेदोपदेशक पुरस्कार (उपदेशक/भजनोपदेशक/कार्यकर्त्ता), मेघजीभाई आर्य साहित्य पुरस्कार (वैदिक साहित्य सेवा), श्रीमती लीलावती महाशय पुरस्कार (विदुषी/महिला कार्यकर्त्री), पंडित युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार (आर्ष पाठ विधि को समर्पित), श्रीमती कृष्णा गाँधी पुरस्कार (३० से ४५ वर्ष के नवयुवक कार्यकर्ता), श्री राजकुमार कोहली पुरस्कार (वयोवृद्ध विद्वान्/संन्यासी), श्रीमती प्रेमलता सहगल पुरस्कार(युवा महिला कार्यकर्ता), श्रीमती भागीदेवी छाबरिया पुरस्कार (आर्ष पाठ विधि से संचालित गुरुकुल), श्री झाऊलाल शर्मा पुरस्कार (आर्ष पाठ विधि से संचालित गुरुकुल), श्रीमती शिवराजवती आर्या पुरस्कार (आर्ष पाठ विधि से अध्ययनरत दो योग्यतम छात्र/छात्रा), श्री हरभगवान दास गांधी पुरस्कार (वेद विषय पर पीएचडी कर रहे छात्र), आचार्य भद्रसेन पुरस्कार (युवा आर्य विद्वान्), नारायण दास हासानन्दानी विशिष्ठ वेदांग पुरस्कार(वेद प्रचारक विद्वान्), कैप्टन देवरत्न आर्य संगठनवीर पुरस्कार(आर्य समाज के संगठन हेतु समर्पित विद्वान्) हैं। उपरोक्त पुरस्कारों हेतु आवेदन १५ दिसम्बर २०१६ तक मांगे गए थे तद्नुरूप समिति प्राप्त पुरस्कारों पर निर्णय लेकर यथासमय विजेताओं के नाम घोषित करेगी।

नागपुर, महाराष्ट्र के प्रसिद्ध आर्य उद्योगपति राव हरिश्चन्द्र आर्य जी का निधन दिनांक २४ दिसम्बर २०१६ को हो गया है ।
समस्त आर्यजगत् के लिए बड़ी क्षति और महाशोक की घड़ी में न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

### सत्यार्थ प्रकाश पहेली – ०८/१९ के विजेता

**सत्यार्थ प्रकाश पहेली– ०८/१९** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं– श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), उषा आर्या; उदयपुर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), परमजीत कौर; नई दिल्ली, श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; दिल्ली, श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री गोरवर्धन लाल झंवर; आष्टा (म.प्र.), श्री इन्द्रजित् देव; यमुनानगर, श्री श्याम मोहन गुप्ता; विजय नगर (इन्दौर), श्री राज नारायण चौधरी; शाजापुर, श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), प्रधान जी; आर्यसमाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान; विजय नगर (राज.), श्री जीवनलाल आर्य; दिल्ली, श्रीमती सुनिता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपादेवी; बीकानेर (राज.), आचार्य उमाशंकर शास्त्री; तेघरा (बिहार), श्री फूलसिंह यादव; मुरादनगर, श्री किशनाराम आर्य; नागौर, सुप्रिया चावला; जालन्धर, कंचन सोनी; बीकानेर (राज.)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

**ध्यातव्य– पहेली के नियम पृष्ठ 17 पर अवश्य पढ़ें।**

# ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता

भक्तगण ऐसा समझते हैं कि ईश्वर की शक्ति को नियमों में बाँधना उसके ईश्वरत्व को कम कर देना है। पर वे यह नहीं सोचते कि नियंत्रण में रहना व रखना ही बलशाली की महानता है। आप अपने पड़ौस में ऐसे बलशाली पुरुष की कल्पना कीजिए जिसे सौ आदमी मिलकर भी नहीं हरा सकते। गोली, चाकू आदि उसके समक्ष व्यर्थ हैं। ऐसा परम ताकतवर पुरुष किस प्रकार रहे, विचार करें। जब तक वह निष्पक्ष भाव से, न्यायपूर्वक, सबके साथ समानता का व्यवहार करता हुआ रहेगा, आदर्श पड़ौसी कहलावेगा। जिस दिन उसने किसी को पक्षपात से उन्नत करने, उसको विशेष सुरक्षा देने, व अपनी स्तुति करने वाले को उपकृत करने में अपने बल का प्रयोग किया तथा दूसरे समूह के लोगों पर अत्याचार प्रारम्भ कर दिया तो आप उसे चापलूची पसन्द, अन्यायी, पक्षपाती, अपनी शक्ति का अनुचित उपयोग करने वाला ही कहेंगे। यही बात ईश्वर के साथ भी है।

**सर्वशक्तिमान-**

**उरु: पृथु: सुभूर्भुव इति त्वोपास्महे वयम्।** - अथर्व. १३/४/८२

आप सब बल वाले अर्थात् आदि अन्तर हित, तथा सब पदार्थों में अच्छी प्रकार से वर्त्तमान और अवकाश स्वरूप से सबके निवास स्थान हैं। इस कारण हम लोग उपासना करके आपके ही आश्रित रहते हैं।

ईश्वर अपनी सर्वशक्तिमत्ता को किसी भी हेतु से स्वेच्छाचारिता के अधीन नहीं करता। यही तो महान् की महानता है। आप लोक में देखें। मनुष्य में राग-द्वेष के कारण वह प्रीति, विरोध,

मोह, लोभ के वशीभूत हो अपने बनाए नियमों को तोड़ देता है तथा समाज के बनाए नियमों को तोड़ने के प्रयास भी करता है। पर यह उसकी कमजोरी है न कि विशेषता। ईश्वर की यही विशेषता है कि वह राग-द्वेष से शून्य, किसी भी परिस्थिति में अपने बनाए नियमों को नहीं तोड़ता।

परमात्मा अपने गुण कर्म स्वभाव के विपरीत कुछ नहीं करता। अन्यथा उसका ईश्वरत्व नहीं रहेगा। अनेक विचारकों ने इस सम्बन्ध में चिन्तन किया है। पाठकों के लाभार्थ कुछ उद्धरण प्रस्तुत हैं।

**ईसाई सन्त सेन्ट थामस लिखते हैं-**

'परमेश्वर भूतकाल को नष्ट नहीं कर सकता। न वह स्वयं पाप में प्रवृत्त हो सकता है, न पाप कर सकता है और न अपने आपको मारकर दूसरा ईश्वर बना सकता है।'

**प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो कहते हैं-**

'क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि परमात्मा कथन से अथवा आचरण से मिथ्या व्यवहार की इच्छा करेगा अथवा अपनी प्रतिकृति बना देगा?' अर्थात् नहीं।

मार्टिन लूथर के शिष्य **पादरी एसलम ने पूछा था-** 'क्या परमात्मा एक वेश्या को कुँआरी बना सकता है?

भावनात्मक स्तर पर हमें ऐसे परमात्मा की कल्पना करना बड़ा सुखद लगता है जो समस्त नियमों कायदों को ताक पर रखकर जो चाहे वह कर सकता है। क्योंकि हमारी कल्पना में परमात्मा द्वारा ये सारे उल्लंघन हमारी इच्छाओं की पूर्ति के लिये किए जावेंगे। पर हम यह सोचना भी नहीं चाहते कि परमात्मा की यह स्वेच्छाचारिता जब हमारे विरुद्ध और वह भी अकारण होगी तब हमें कैसा लगेगा? तनिक उस विद्यार्थी के दिल से पूछिये जो वर्षभर परिश्रम कर प्रश्न-पत्र का हल शत-प्रतिशत ठीक देता है परन्तु अध्यापक चापलूसी, सेवा या अन्यान्य कारणों से अन्य छात्र को जो अयोग्य होता है प्रथम स्थान दे देता है। क्या अध्यापक की सर्वशक्तिमत्ता योग्य छात्र को भली लगेगी? क्या वह ऐसे अध्यापक के प्रति श्रद्धाभाव रख पावेगा?

**सर्वशक्तिमान्-**

**सेमं न: काममा पृण गोभिरश्वै: शतक्रतो।**
**स्तवाम त्वा स्वाध्य:।।** - ऋ. १/१६/६

ईश्वर का यह सामर्थ्य है कि वह सब पुरुषार्थी धार्मिक मनुष्यों की कामनाओं की उनके अपने अपने कर्मों के अनुसार पूर्ति करता है। जो सृष्टि में अति श्रेष्ठ पदार्थों के उत्पादन और धारण के द्वारा सब प्राणियों को सुखी करता है। इसलिये उसी की सबको नित्य उपासना करनी चाहिये, अन्य की नहीं।

अतएव किसी भी कारण से नियमों का उल्लंघन न करना यही ईश्वर की शक्ति है। यही उसकी महानता है। यही उसे जीवों की तुलना में अतीव महान् बनाती है।

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग

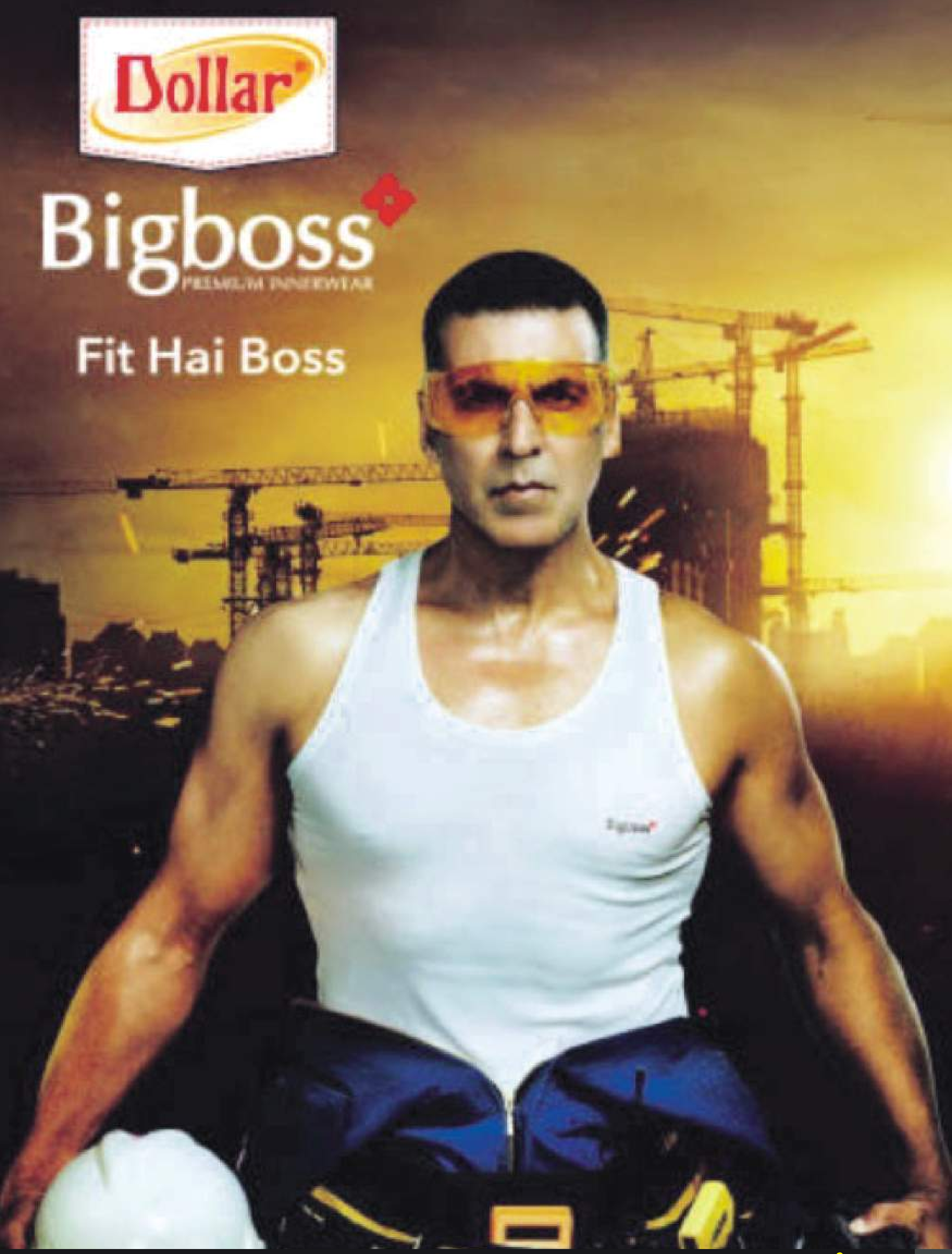
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 January-2020 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

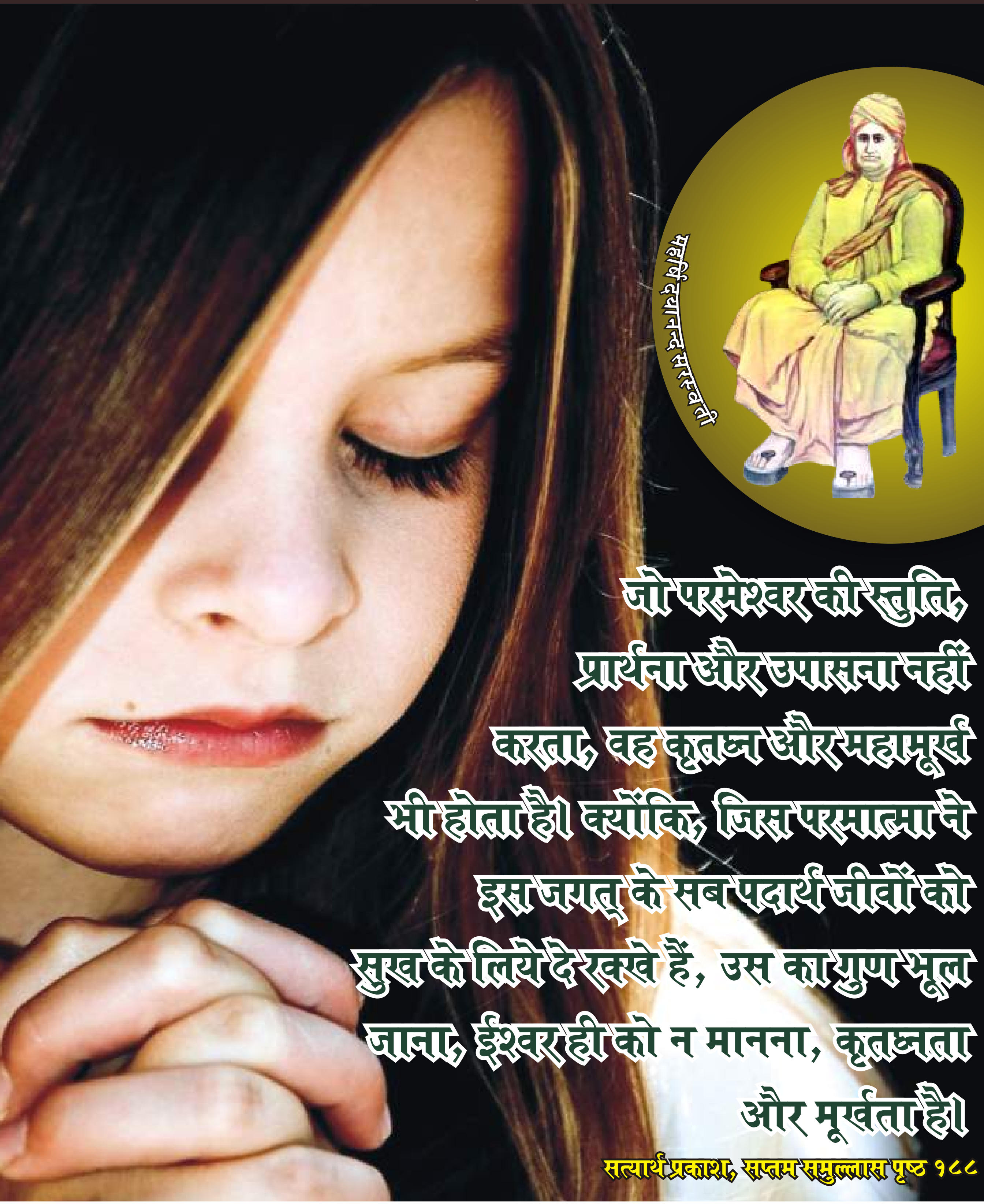


जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता, वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है। क्योंकि, जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिये दे रक्खे हैं, उस का गुण भूल जाना, ईश्वर ही को न मानना, कृतघ्नता और मूर्खता है।

सत्यार्थ प्रकाश, सप्तम समुल्लास पृष्ठ १८८

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरूरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर